bjpkamaljyoti@gmail.com www.up.bjp.org

संवत 2079 युगाब्द 5124 कुल पृष्ठ –32 अक्टूबर प्रथम अंक – 5

वर्तमान

कमल ज्योति

निकाय चुनाव बैठक
नगर पालिका परिषद

भारतीय जनता पार्टी, उत्तर प्रदेश
बैठक

निकाय चुनाव बैठक
नगर पालिका परिषद

निकाय चुनाव बैठक
नगर पालिका परिषद

वर्तमान
कमल ज्योति

संरक्षक
श्री भूपेन्द्र सिंह
सम्पादक
अरुण कान्त त्रिपाठी
प्रबन्ध सम्पादक
राजकुमार
प्रकाशक
प्रो0 श्याम नन्दन सिंह
पृष्ठ संयोजक
ओम प्रकाश पंडित

कार्यालय
कमल ज्योति, 7–विधानसभा मार्ग
लखनऊ – 1
फोन :– 0522–2200187
फैक्स :– 0522–2612437

Email-
bjpkamaljyoti@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेखों से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं

मुद्रक
नूतन ऑफसेट मुद्रण केन्द्र, राजेन्द्र नगर, लखनऊ–4

www.up.bjp.org
bjpkamaljyoti
bjpkamaljyoti
@bjpkamaljyoti

जय महाकाल

प्रकाश पर्व दीपावली की हार्दिक बधाई, शुभकामनायें।
कमल ज्योति परिवार

सांस्कृतिक पुनर्निर्माण की सतत साधना

संपादकीय

भारतीय सनातन संस्कृति में राष्ट्रदेव परम्परा में विद्यमान रहे हैं। गुलामी के काल खण्ड में सांस्कृतिक मान बिन्दुओं पर सर्वाधिक आक्रमण हुए। जो अब पुनः संरक्षित हो रहे हैं।

स्वतंत्रता के बाद प्रथम सरदार बल्लभ भाई पटेल के प्रयासों से सोमनाथ मंदिर का भव्य निर्माण हुआ। नरेन्द्र मोदी के प्रधानमंत्री बनने के बाद इस प्रचलित राजनीति में बदलाव हुआ। सांस्कृतिक विषयों को देश की अर्थव्यवस्था से जोड़ा गया। तीर्थाटन और पर्यटन अर्थव्यवस्था की मुख्यधारा में समाहित हुए। पौराणिक और ऐतिहासिक स्थलों के विश्वस्तरीय विकास का संकल्प लिया गया। यह महत्वपूर्ण है कि विश्व के अन्य हिस्सों में जब मानव सभ्यता का विकास भी नहीं हुआ था तब हमारे यहां राष्ट्र प्रादुर्भाव हो चुका था। ऋग्वेद में राष्ट्र का सुंदर उल्लेख है। राष्ट्र की भौगोलिक सीमाओं के साथ ही सांस्कृतिक व्यापकता को दर्शाने वाले वर्णन प्राचीन ग्रन्थों में हैं। भारत का भौगोलिक व सांस्कृतिक क्षेत्र बहुत विस्तृत था।

देश के मठ और मंदिर, नदी तीर्थ हमारे सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के प्रतीक हैं। भारत ने जब तक अपनी इस महान विरासत पर गर्व किया, तब तक यहां के लोग राष्ट्रीय स्वाभिमान से प्रेरित रहे। तब तक भारत समर्थ रहा। वह विश्वगुरु के रूप में प्रतिष्ठत रहा। आज उसी राष्ट्रीय स्वाभिमान को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी तन्मयता से जागृत करने में जुटे हैं। उन्होंने संकल्प से सिद्धि के अनेक ऐतिहासिक कार्य किए हैं। अयोध्या में जन्मभूमि पर पांच शताब्दी पुराना भव्य श्रीराम मंदिर निर्माण का संकल्प पूरा होने को है। श्री काशी विश्वनाथधाम संकरी गलियों में सिमट गया था। इसको भव्य बनाने की पहले कभी चर्चा नहीं होती थी। प्रधानमंत्री के प्रयासों से यह कार्य भी सिद्ध हुआ। इसी प्रकार श्री विंध्यवासिनी धाम का भव्य निर्माण हो रहा है। सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की यह यात्रा जारी है। उज्जैन में विश्वप्रसिद्ध श्री महाकाल लोक का लोकार्पण कर प्रधानमंत्री ने इस यात्रा का महान पड़ाव पार कर लिया है। उनके इस संकल्प में योगी आदित्यनाथ और शिवराज सिंह चौहान सहायक बने हैं। यदि उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश में अपने को सेक्युलर कहने वाली तथाकथित सरकारें होतीं तो यह कार्य सहज संभव नहीं हो पाता। महाकाल लोक में अलग9अलग प्रदेशों की सांस्कृतिक झलक अनेकता में एकता का प्रतिबिम्ब है। उज्जैन में प्रधानमंत्री ने कहा भव्य और दिव्य श्री महाकाल लोक को राष्ट्र को समर्पित करने का सौभाग्य मिला। देश के बारह ज्योतिर्लिंगों में महाकालेश्वर की अपनी महिमा है। प्रधानमंत्री ने ठीक ही कहा है कि भारत के सांस्कृतिक वैभव की पुनर्स्थापना का लाभ न केवल भारत अपितु पूरे विश्व एवं समूची मानवता को मिलेगा। उज्जैन में श्री महाकाल लोक की स्थापना इसी की कड़ी हैं। यह काल के कपाल पर कालातीत अस्तित्व का शिलालेख है। उज्जैन आज भारत की सांस्कृतिक अमरता की घोषणा और नए कालखंड का उद्घोष कर रहा है। हमारे लिए धर्म का अर्थ कर्तव्यों का सामूहिक संकल्प, विश्व का कल्याण एवं मानव मात्र की सेवा है। आजादी के पहले देश ने जो खोया था, उसकी आज पुनर्स्थापना हो रही है। भगवान महाकाल की नगरी उज्जैन प्रलय के प्रहार से मुक्त है। उज्जैन काल गणना एवं ज्योतिषिय गणना का केंद्र है। यह भारत की आत्मा का केंद्र भी है। यह पवित्र सात पुरियों में एक है। यहां भगवान श्रीकृष्ण ने शिक्षा ग्रहण की। विक्रमादित्य के प्रताप से भारत के स्वर्णकाल की शुरुआत हुई। विक्रम संवत महाकाल की भूमि से ही शुरू हुआ। यहां कालचक्र के चौरासी कल्पों के प्रतीक चौरासी महादेव, चार महावीर, छह विनायक,आठ भैरव,अष्टमातृका,नौ ग्रह, दस विष्णु, ग्यारह रूद्र, बारह आदित्य, चौबीस देवियां एवं 88 तीर्थ हैं। इन सबके केंद्र में कालाधिराज महाराज विराजमान हैं। पूरे ब्रह्माण्ड की ऊर्जा को ऋषियों ने प्रतीक रूप में समाहित किया। कालिदास एवं बाणभट्ट की रचनाओं में यहां की सभ्यता, संस्कृति, शिल्प और वैभव का वर्णन मिलता है। किसी राष्ट्र का सांस्कृतिक वैभव, उसकी पहचान उसकी सफलता की सबसे बड़ी निशानी है। यह सच है कि आज भारत के सभी धार्मिक एवं सांस्कृतिक केंद्रों का विकास किया जा रहा है। सोमनाथ, केदारनाथ, बद्रीनाथ आदि तीर्थों का समुचित विकास सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के पुनर्जागरण की दिशा में बड़ी पहल है। उत्तराखंड के चारधाम प्रोजेक्ट में शामिल ऑल वेदर रोड लाइफ लाइन साबित होगी। महाकाल लोक अतीत के गौरव के साथ भविष्य के स्वागत के लिए तैयार है। कोणार्क का सूर्य मंदिर, एलोरा का कैलाश मंदिर, मोढेरा का सूर्य मंदिर, तंजौर का ब्रह्मदेवेश्वर मंदिर, कांचीपुरम का तिरूमल मंदिर, रामेश्वरम मंदिर, मीनाक्षी मंदिर और श्रीनगर का शंकराचार्य मंदिर हमारी निरंतरता और परंपरा के वाहक हैं। भारत आज विश्व के मार्गदर्शन के लिए फिर तैयार हो रहा है। भारत ''वसुंधैव कुटुम्बकम्'' में आध्यात्मिक गुरू की भूमिका निभाने में अगसर हो रहा है। नमोस्तुते!

akatri.t@gmail.com

निकायों में भाजपा का एक बार फिर परचम

भारतीय जनता पार्टी ने आगामी नगरीय निकाय के चुनाव को लेकर अपनी तैयारिया तेज कर दी है। राज्य मुख्यालय पर प्रदेश अध्यक्ष श्री भूपेन्द्र सिंह चौधरी की अध्यक्षता में नगर निकाय चुनाव को लेकर पार्टी के जिलाध्यक्ष व जिला प्रभारियों सहित नगर निकाय चुनाव के लिए पार्टी द्वारा नियुक्त किए गए संयोजकों/प्रभारियों की बैठक सम्पन्न हुई। प्रदेश के उपमुख्यमंत्री श्री केशव प्रसाद मौर्य, बृजेश पाठक व प्रदेश महामंत्री (संगठन) श्री धर्मपाल सिंह जी ने बैठक में उपस्थित पार्टी पदाधिकारियों व प्रमुख नेताओं को नगर निकाय के चुनाव में पार्टी की अभूतपूर्व सफलता के लिए मार्गदर्शन किया व आगामी कार्ययोजना पर चर्चा की। नगर पालिका परिषद व नगर पंचायत के चुनाव को लेकर अवध–कानपुर क्षेत्र, बृज व पश्चिम क्षेत्र और गोरखपुर व काशी क्षेत्र की अलग–अलग क्षेत्रशः बैठकें हुई।

प्रदेश अध्यक्ष श्री भूपेन्द्र सिंह चौधरी ने बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भाजपा की डबल इंजन की सरकार की नीतियों का शत प्रतिशत लाभ जनता को तभी मिल सकता है जब निकायों में भाजपा की सरकार हो, यानि निकायों में भी एक बार फिर भाजपा की जीत का परचम फहरेगा तो हम और भी अधिक मजबूती से अपने काम और प्रभाव दोनो को बढ़ा सकेंगे।

श्री चौधरी ने कहा कि पिछले साल ग्राम पंचायतों, क्षेत्र पंचायतों और जिला पंचायतों में भाजपा ने अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया था। उसके बाद हुए विधानसभा 2022 के चुनावों में भी हम दोबारा चुनाव जीतकर आए हैं। अब नगर निकाय के चुनाव होने जा रहे हैं, हमें एक बार फिर अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन दोहराना है। यह इसलिए भी जरूरी है की नगर निकायों की स्थानीय सरकार में जब हमारी पार्टी सत्ता में होगी तो केंद्र और राज्य सरकार की योजनाएं जमीन पर उतर सकेंगी, आम लोगों के लिए हम और भी अच्छे ढंग से जनकल्याणकारी और विकास के कार्य कर सकेंगे।

प्रदेश भाजपा अध्यक्ष ने कहा कि नगर निकाय के चुनाव पार्टी के लिए महत्वपूर्ण है। माननीय श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में पार्टी का चहुंओर विस्तार हुआ है। आज पार्टी सर्वस्पर्शी, सर्वव्यापी, सर्वसमावेशी और सर्वग्राही बन गई है। ऐसे में हम सब की जिम्मेदारी है कि नगरीय निकाय चुनावों में पार्टी के नए पुराने सभी कार्यकर्ताओं को एकजुट कर चुनाव में सक्रिय करते हुए पार्षद से लेकर नगर पंचायत व पालिका के अध्यक्षों और महापौर के पद पर पार्टी की जीत सुनिश्चित करने के संकल्प के साथ पार्टी द्वारा तय की गई कार्ययोजना के अनुसार नगर निकाय चुनाव में जीत दर्ज करने के लिए कार्य करना है। उन्होंने कहा कि गरीब कल्याण, महिलाओं को सुरक्षा, बेहतर कानून व्यवस्था, शिक्षा, स्वास्थ, किसान कल्याण के लिए लागू की गई योजनाओं सहित समाज के सभी वर्गों के लिए भाजपा सरकार द्वारा किए गए कार्यों के कारण जन–जन का समर्थन भाजपा को मिल रहा है।

उपमुख्यमंत्री श्री केशव प्रसाद मौर्य ने कहा कि सपा, बसपा, कांग्रेस हताशा व निराशा के गर्त में डूबे हुए है फिर भी हमें विपक्ष को कमजोर नहीं समझना है और पूरी तैयारी तथा मेहनत के साथ नगरीय निकाय चुनाव लड़ना है। उन्होंने बैठक को सम्बोधित करते हुए कहा कि आप सभी के अनुभव और परिश्रम के से भाजपा ने बहुत चुनाव लड़े और जीते है। हमें नगर निगम, नगर पालिका, नगर पंचायत के अध्यक्ष व सभी पार्षदों की सुनिश्चित विजय के संकल्प के साथ चुनाव की तैयारी में जुटना है। प्रदेश के मतदाता भाजपा के साथ हैं हमें मतदाताओं से सम्पर्क और उन्हें मतदान केन्द्र तक पहुंचाने का काम करना है। उन्होंने विभिन्न सामाजिक संगठनों व गणमान्य जनों को भी योजनापूर्वक पार्टी से जोड़कर नगर निकाय के चुनाव में पार्टी की जीत के संकल्प के साथ सक्रिय करने पर जोर दिया।

उपमुख्यमंत्री श्री बृजेश पाठक ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी के एक–एक कार्यकर्ता अपने परिश्रम से प्रदेश में विजय की परम्परा प्रारम्भ कर चुका है। देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व की केन्द्र सरकार व मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व की प्रदेश भाजपा सरकार की जनकल्याणकारी योजनाएं तथा पार्टी कार्यकर्ताओं के मतदाताओं से सतत् संवाद व सम्पर्क ने भाजपा को जन–जन की पार्टी बनाया है। उन्होंने कहा कि आगामी नगर निकाय चुनाव की चुनौति फिर हमारे सामने है। पार्टी कार्यकर्ताओं के परिश्रम व समर्पण से एक बड़ी जीत के साथ प्रदेश में नया इतिहास लिखेगी। उन्होंने कहा कि भ्रष्टाचार व अपराध पर जीरो टॉलरेंस की नीति के साथ प्रदेश के मतदाता पूर्णरूपेण भाजपा के साथ है। उन्होंने कहा कि प्रदेश के मतदाताओं ने तय कर लिया है कि सपा–बसपा व कांग्रेस सहित पूरा विपक्ष भी अगर एक साथ मिलकर चुनाव लड़े तब भी कमल खिलाना है।

पार्टी के प्रदेश महामंत्री (संगठन) श्री धर्मपाल सिंह जी ने नगर निकाय के आगामी चुनाव को लेकर पार्टी संगठन द्वारा तैयार की गई कार्ययोजना पर विस्तार पूर्वक चर्चा की। उन्होंने कहा निकाय चुनाव में पार्टी की जीत सुनिश्चित करने के लिए हम सबको मिलकर मतदाता पुनरीक्षण अभियान में सक्रियता पूर्वक कार्य करना होगा। मतदाता सूची में नाम बढाने के लिए कार्यकर्ताओं द्वारा पार्टी की योजनानुसार घर–घर सम्पर्क अभियान चलाने को कहा। उन्होंने कहा नगर निकाय के चुनाव में सफलता के लिए बूथ स्तर तक कार्ययोजना बनाकर कार्य करना होगा। वार्ड व बूथ स्तर पर पार्टी के नए पुराने कार्यकर्ताओं, मोर्चा, प्रकोष्ठों के पदाधिकारी की सूची बनाकर उन्हें निकाय चुनाव में योजनापूर्वक सक्रिय करना होगा। प्रदेश महामंत्री संगठन ने कहा कि लोकसभा व विधानसभा चुनाव की तरह ही नगर निकाय के चुनाव में भी बूथ जीता–चुनाव जीता के मंत्र के साथ हम सब को कार्य करना है।

बैठक में नगर निकाय चुनाव को लेकर प्रदेश महामंत्री व राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री जेपीएस राठौर ने प्रस्तावना रखी। संचालन प्रदेश मंत्री त्रयम्बक त्रिपाठी ने किया।

नई तकनीक से कम लागत में बनायें टिकाऊ सड़कें

इंडियन रोड कॉग्रेस का 81वाँ अधिवेशन लखनऊ में सम्पन्न हुआ। 11 वर्षों बाद उ0प्र0 ने मेजबानी किया देश विदेश के लगभग 1500 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी ने 1 ट्रिलीयन डालर इकोनॉमी का जो लक्ष्य रखा है, उसमें इन्फ्रास्ट्रक्टर व सड़कों के विशेष योगदान से पूरा होने वाला है। इस अधिवेशन के उद्घाटन में केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने वर्ष 2024 से पहले यूपी को पांच लाख करोड़ रुपये की सड़क परियोजनाएं देने का एलान किया। लखनऊ में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के साथ इंडियन रोड कांग्रेस के 81वें अधिवेशन का उद्घाटन करते हुए गडकरी ने यूपी के लिए 8 हजार करोड़ रुपये की परियोजनाओं की स्वीकृति भी दे दी। उन्होंने कहा कि 15 माह में यूपी की सड़कों का नेटवर्क अमेरिका के बराबर होगा।

गडकरी ने मुंबई–पुणे एक्सप्रेसवे का जिक्र करते हुए कहा कि पैसों से ज्यादा जरूरी इच्छाशक्ति है। इच्छाशक्ति न होने पर सारी योजनाएं कमेटियों में फंसकर रह जाती हैं। जो शोध जमीन पर न उतर रहा हो, उस रिसर्च पेपर का कोई मतलब नहीं। उन्होंने कहा कि हमें वेस्ट (व्यर्थ) को वेल्थ (धन) में बदलना होगा। निर्माण की गुणवत्ता बढ़ाने के साथ उसकी कीमत घटानी होगी। सड़क निर्माण में प्लास्टिक समेत सभी तकनीकों का इस्तेमाल करना होगा, ताकि पर्यावरण के लिहाज से भी यह उचित रहे।

इंडियन रोड कांग्रेस के 81वें अधिवेशन का उद्घाटन

गडकरी ने कहा कि हर साल देश में 5 लाख सड़क हादसे होते हैं। इनमें 1.5 लाख लोगों की मौत होती हैं। परियोजनाओं की डीपीआर में अभी भी बहुत खामियां हैं। ऑडिट में एक–एक परियोजना में 50–60 तक खामियां निकल रही हैं। इसलिए हर काम में पूर्णता (परफेक्शन) लाने की आवश्यकता है। निर्माण कार्य इस तरह से होने चाहिए कि 25 साल तक मेंटेनेंस पर कोई खर्च ही न हो।

सड़क हादसों में कमी के प्रयास

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ इंडियन रोड कांग्रेस के उद्घाटन सत्र में सड़क हादसों को लेकर चिंतित दिखे। उन्होंने कहा कि इंजीनियर सड़कों की डिजाइन सुधारने पर ध्यान दें, ताकि हादसों में कमी लाई जा सके। उन्होंने सवाल उठाते हुए कहा कि यूपी में ढाई साल में सदी की सबसे बड़ी महामारी कोरोना से 23,600 मौतें हुईं, जबकि सड़क हादसों में हर वर्ष 20–21 हजार जानें जाती हैं। यह एक बड़ी चुनौती है, जिस पर तकनीक के सफल इस्तेमाल से काबू पाना आवश्यक है।

उन्होंने कहा कि आबादी के लिहाज से सबसे बड़ा राज्य होने के कारण यूपी की चुनौतियां भी बड़ी हैं। सुप्रीम कोर्ट की गाइडलाइंस के अनुसार हर चौथे महीने सड़क सुरक्षा को लेकर बैठक करते हैं। फिर भी इतनी ज्यादा संख्या में हादसे होना चिंता का सबब हैं। घरों व पुलों के निर्माण के लिए हम प्री–फैब्रिकेटेड (पूर्व निर्मित) ढांचों का इस्तेमाल कर रहे हैं तो सड़कों के मामले में भी इस दिशा में आगे बढ़ना चाहिए।

सीएम ने कहा कि इंडियन रोड कांग्रेस में तकनीक के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने वालों को सम्मानित करने के लिए यूपी मेडल की शुरुआत की जानी चाहिए। यह मेडल प्रदेश सरकार की ओर से दिया जाएगा।

नई तकनीक से कम लागत में टिकाऊ सड़कें बनायें

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने इंजीनियरों का आह्वान किया कि नई तकनीक से कम लागत में टिकाऊ सड़कों के निर्माण पर विचार करें। सड़क निर्माण की एफडीआर तकनीक को यूपी अधिकाधिक अपना रहा है। इससे लागत में एक–तिहाई की कमी आई है। वे शनिवार को इंडियन रोड कांग्रेस (आईआरसी) के उद्घाटन सत्र में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि साढ़े पांच साल में डबल इंजन की सरकार ने अंतर्राज्यीय कनेक्टिविटी बढ़ाई है। यूपी में फोरलेन सड़कों का जाल बिछाया है। औद्योगिक निवेश बढ़ाने के लिए बेहतर कानून–व्यवस्था के साथ ही विश्वस्तरीय एक्सप्रेसवे की जरूरत है। इसको ध्यान में रखते हुए पांच साल में विश्वस्तरीय बुंदेलखंड और पूर्वांचल एक्सप्रेसवे बनाए गए हैं। केंद्र सरकार ने भी दिल्ली–मेरठ 12 लेन

एक्सप्रेसवे का निर्माण कराया है। केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री के रूप में नितिन गडकरी ने एक मॉडल प्रस्तुत किया। पुणे–मुंबई एक्सप्रेसवे बनाकर 6–8 घंटे का सफर दो घंटे का कर दिया गया।

सीएम ने कहा कि आईआरसी को हर साल सड़कों के बारे में एडवाइजरी जारी करनी चाहिए। इस एडवाइजरी को लागू करना सभी राज्यों के लिए अनिवार्य हो। ताकि कम लागत में बेहतर सड़कें बन सकें और हादसों में कमी आए। उन्होंने कहा कि भगवान विश्वकर्मा के देश में हम तकनीक के लिए पश्चिम की ओर देखें, यह उचित नहीं है।

उन्होंने कहा कि आईआरसी के अधिवेशन से तकनीकी संस्थानों के छात्रों को भी जोड़ा जाए। ताकि वे सैद्धांतिक ज्ञान तक ही सीमित न रहें। उनके लिए नवाचार से युक्त पाठ्यक्रम तैयार हो सके। सीएम ने कहा कि सड़क तकनीक में आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस का ज्यादा से ज्यादा प्रयोग किया जाए।

पेट्रोल–डीजल के वाहन चलन से बाहर करने का आह्वान

केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री गडकरी ने कहा कि पूरे देश में सड़कों का बेहतर नेटवर्क बना है। सफर का समय काफी घट गया है। ऑटो सेक्टर 7.5 लाख करोड़ रुपये का है और इससे चार करोड़ रोजगार पैदा हो रहे हैं। सबसे ज्यादा जीएसटी इसी सेक्टर से आता है। लेकिन, ईंधन भी 70 लाख करोड़ रुपये का आयात करना पड़ता है। उन्होंने यूपी में इलेक्ट्रिक वाहनों के ज्यादा से ज्यादा प्रयोग पर ध्यान देने को कहा। उन्होंने आह्वान कि अगले पांच साल में यूपी में पेट्रोल–डीजल के वाहन समाप्त कर दो। इससे कम खर्च में पर्यावरण फ्रेंडली परिवहन उपलब्ध करवाया जा सकता है। पराली से ही काफी एथेनॉल व दूसरी चीजें पैदा हो सकती हैं, जिनका इस्तेमाल निर्माण कार्यों में हो सकता है। कहा कि इससे रोजगार के अवसर भी बढ़ेंगे और आयात पर निर्भरता भी कम होगी।

यूपी की इन परियोजनाओं को दी मंजूरी

गडकरी ने कहा कि यूपी में एनच–731 के शाहबाद बाईपास की शुरुआत से लेकर हरदोई बाईपास के अंत तक मौजूदा सड़क के चार लेन में सुधार और उन्नयन को 1212.26 करोड़ रुपये की लागत के साथ स्वीकृति दी गई है। शाहजहांपुर और हरदोई जिलों में एनएच–731 के शाहजहांपुर बाईपास की शुरुआत से शाहबाद बाईपास की शुरुआत तक मौजूदा सड़क केचार लेन में सुधारने और उन्नयन को 947.74 करोड़ रुपये की लागत से साथ स्वीकृति दी गई है। उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड राज्य में एनएच–734 खंड के मुरादाबाद–ठाकुरद्वारा –काशीपुर, मुरादाबाद और काशीपुर बाईपास सहित कनेक्शन के सुधार और उन्नयन कार्यां को 2006.82 करोड़ रुपये की लागत के साथ स्वीकृति दी गई है।

पराली से बनाएं एथेनॉल और सीएनजी

गडकरी ने कहा कि देश में पराली से एथेनॉल बनाया जा रहा है। भविष्य में हम इससे बायो सीएनजी बनाने पर भी काम कर रहे हैं। अगर हमारे देश के 117 आकांक्षी जिलों में इस तकनीक पर काम किया जाए तो उन्हें आर्थिक रूप से मजबूत बनाकर रोजगार के अवसर भी बढ़ाए जा सकते हैं। नेट जीरो के लक्ष्यों को हासिल करने के लिए जो तकनीकी रोडमैप पेश किया जा रहा है, वह ट्रिपल ई–इकोनॉमी, एनवायरमेंट व इकोलॉजी की अवधारणा पर आधारित है।

साढ़े आठ साल में हुए बहुत काम : वीके सिंह

केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग राज्यमंत्री वीके सिंह ने कहा कि देश में साढ़े आठ साल में सड़कों का जाल बिछाया गया है। यूपी में हाईवे का इतना अच्छा काम पहले कभी नहीं हुआ। सीएम योगी के नेतृत्व में यूपी लगातार आगे बढ़ रहा है। इंडियन रोड कांग्रेस के चेयरमैन सीपी जोशी ने अधिवेशन की रूपरेखा और योजनाओं को सामने रखा। कार्यक्रम में उत्कृष्ट कार्य करने वाले अभियंताओं और विशेषज्ञों को सम्मानित किया गया। आईआरसी की स्मारिका और यूपी पीडब्ल्यूडी की पत्रिका प्रज्ञता का विमोचन भी किया गया।

हर रेलवे फाटक पर बनेगा ओवरब्रिज : जितिन

प्रदेश के पीडब्ल्यूडी मंत्री जितिन प्रसाद ने कहा कि यूपी अब इंफ्रास्ट्रक्चर स्टेट के रूप में पहचाना जाता है। देश में हर दिन 37 किमी नया हाईवे बन रहा है। हर रेलवे फाटक पर ओवरब्रिज भी बनाया जाएगा। उन्होंने इंजीनियरों का आह्वान किया कि गांवों में बेहतर सड़क नेटवर्क उपलब्ध कराने के लिए तकनीक पर ध्यान दें। पीडब्ल्यूडी राज्यमंत्री बृजेश सिंह ने सभी का आभार जताया। इस अवसर पर मुख्य सचिव दुर्गा शंकर मिश्र, प्रमुख सचिव पीडब्ल्यूडी नरेंद्र भूषण, एनएचएआई की अध्यक्ष अलका उपाध्याय, क्षेत्रीय अधिकारी एमके जैन व परियोजना निदेशक अमित चित्रांशी, आईआरसी के महासचिव संजय निर्मल भी मौजूद रहे।

सुशीलं जगद्येन नम्रं भवेत्

विश्व का सबसे बड़ा सांस्कृतिक संगठन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ 97वें वर्ष में प्रवेश कर चुका है। 2025 में संघ का शताब्दी वर्ष होगा। इस वर्ष के विजयादशमी उत्सव नागपुर में मुख्य अतिथि पदमश्री पर्वतारोही संतोष यादव जी ने कहा कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ भारतीय सनातन संस्कृति को संवारने बढ़ाने वाला संगठन है। इस अवसर पर पू0 सरसंघ चालक डा0 मोहन भागवत जी ने कहा कि नौरात्रि की शक्ति पूजा के पश्चात विजय के साथ उदित होने वाली आश्विन शुक्ल दशमी के दिन हम प्रतिवर्षानुसार विजयादशमी उत्सव को संपन्न करने के लिए यहाँ एकत्रित है। शक्तिस्वरूपा जगद्जननी ही शिवसंकल्पों के सफल होने का आधार है। सर्वत्र पवित्रता व शान्ति स्थापन करने के लिए भी शक्ति का आधार अनिवार्य है। संयोग से आज प्रमुख अतिथि के रूप में अपनी गरिमामयी उपस्थिति से हमें लाभान्वित व हर्षित करने वाली श्रीमती संतोष यादव उसी शक्ति का व चैतन्य का प्रतिनिधित्व करती हैं। उन्होंने गौरी शंकर की ऊँचाई को दो बार पादाक्रांत किया है।

राज कुमार

संघ के कार्यक्रमों में अतिथि के नाते समाज की प्रबुद्ध व कर्तृत्व संपन्न महिलाओं की उपस्थिति की परम्परा पुरानी है। व्यक्ति निर्माण की शाखा पद्धति पुरुष व महिला के लिए संघ तथा समिति की पृथक चलती है। बाकी सभी कार्यों मे महिला पुरुष साथ में मिलकर ही कार्य संपन्न करते हैं। भारतीय परम्परा में इसी पूरकता की दृष्टि से विचार किया गया है। हम ने उस दृष्टि को भुला दिया, मातृशक्ति को सीमित कर दिया। सतत आक्रमणों की परिस्थिति ने इस मिथ्याचार को तात्कालिक वैधता प्रदान की तथा उसको एक आदत के रूप में ढाल दिया । भारत के नवोत्थान के उषःकाल की पहली आहट से हमारे सभी महापुरुषों ने इस रूढ़ि को त्यागकर; मातृशक्ति को एकदम देवता स्वरूप मानकर पूजाघर में बंद करना अथवा द्वितीय श्रेणी की मानकर रसोईघर में मर्यादित कर देना, इन दोनों अतियों से बचते हुए उनके प्रबोधन, सशक्तिकरण तथा समाज के सभी क्रियाकलापों में, निर्णय प्रक्रिया सहित सर्वत्र बराबरी की सहभागिता पर ही जोर दिया है। तरह – तरह के अनुभवों की ठोकरें खा कर विश्व में प्रचलित व्यक्तिवादी तथा स्त्रीवादी दृष्टिकोण भी अब इस तरफ ही अपना विचार मोड़ रहा है। 2017 में विभिन्न संगठनों में काम करने वाली महिला कार्यकर्ताओं ने मिलकर भारत की महिलाओं का बहुत व्यापक व सर्वांगीण सर्वेक्षण किया। वह शासन को भी पहुंचाया गया । उस सर्वेक्षण के निष्कर्षों से भी मातृशक्ति के प्रबोधन, सशक्तिकरण तथा उनकी समान सहभागिता की आवश्यकता अधोरेखित होती है । यह कार्य कुटुम्ब स्तर से प्रारम्भ होकर संगठनों तक स्वीकृत व प्रचलित होना पड़ेगा, तब और तभी मातृशक्ति सहित सम्पूर्ण समाज की संहति राष्ट्रीय नवोत्थान में अपनी भूमिका का सफल निर्वाह कर सकेगी।

इस राष्ट्रीय नवोत्थान की प्रक्रिया को अब सामान्य व्यक्ति भी अनुभव कर रहा है। अपने प्रिय भारत के बल में, शील में तथा जागतिक प्रतिष्ठा में वृद्धि का निरन्तर क्रम देखकर हम सभी आनन्दित हैं । सभी क्षेत्रों में आत्मनिर्भरता की ओर ले जाने वाली नीतियों का अनुसरण का पुरस्कार शासन के द्वारा हो रहा है । विश्व के राष्ट्रों में अब भारत का महत्व तथा विश्वसनीयता

बढ़ गयी है। सुरक्षा क्षेत्र में हम अधिकाधिक स्वावलंबी होते चले जा रहे हैं । कोरोना की विपदा से निकल कर गति से सम्हल कर हमारी अर्थव्यवस्था पूर्व स्थिति प्राप्त कर रही है। आधुनिक भारत के इस आगेकूच के आर्थिक, तकनीकी तथा सांस्कृतिक बुनियादी ढाँचे का वर्णन नयी दिल्ली में कर्तव्य – पथ के उद्घाटन समारोह के समय प्रधानमंत्री जी से आपने सुना ही है। शासन के द्वारा स्पष्ट रूप से घोषित यह दिशा अभिनन्दन योग्य है। परन्तु इस दिशा में हम सब मन वचन कर्म से एक होकर चलें, इसकी आवश्यकता है। आत्मनिर्भरता के पथपर बढ़ने के लिए अपने राष्ट्र के आत्मस्वरूप को, शासन, प्रशासन व समाज स्पष्ट तथा समान रूप से समझता हो यह अनिवार्य पूर्वशर्त है। अपने अपने स्थान व परिस्थिति में उसके आधार पर बढ़ते समय आवश्यकता पड़ने पर कुछ लचीलापन धारण करना पड़ता है। तब आपसी समझदारी तथा विश्वास मिलकर आगेकूच को कायम रखते हैं। विचार की स्पष्टता, समान दृष्टि तथा दृढ़ता, लचीलेपन की मर्यादा का भान प्रदान कर गलतियों से व भटकाव से बचाते हैं। शासन, प्रशासन, विभिन्न प्रकार के नेतागण तथा समाज इस प्रकार स्वार्थ व भेदभावों से परे होकर सहचित्त हो कर्तव्यपथ पर बढ़ते हैं, तब राष्ट्र प्रगति की दिशा में अग्रसर होता है। शासन प्रशासन तथा नेता – गण अपने कर्तव्यों को करेंगे ही, समाज को भी अपने कर्तव्यों का विचारपूर्वक निर्वहन करना चाहिए।

इस नवोत्थान की प्रक्रिया में अभी भी बाधाओं को पार करने का काम करना पड़ेगा। पहली बाधा है गतानुगतिकता ! समय के साथ मनुष्यों का ज्ञाननिधि बढ़ते रहता है। समय के चलते कुछ चीज़ें बदलती है, कुछ विलुप्त हो जाती है। कुछ नयी बातें व परिस्थितियाँ जन्म भी लेती है। इसलिए नयी रचना बनाते समय हमें परम्परा व सामयिकता का समन्वय करना पड़ता है। कालबाह्य हुई बातों का त्याग कर नयी युगानुकुल व देशानुकुल परम्पराएं बनानी पड़ती है, उसी समय हमारी पहचान, संस्कृति, जीवन दृष्टि आदि को अधोरेखित करने वाले शाश्वत मूल्यों का क्षरण न हो, उनके प्रति श्रद्धा व उनका आचरण, पूर्ववत बना रहे इसकी सावधानी बरतनी पड़ती है।

दूसरे प्रकार की बाधाएं भारत की एकता व उन्नति को न चाहने वाली शक्तियां निर्माण करती हैं। ग़लत अथवा असत्य विमर्श को प्रसारित कर भ्रम फैलाना, आततायी कृत्य करना अथवा उसको प्रोत्साहन देना और समाज में आतंक, कलह व अराजकता को बढ़ाते रहना यह उनकी कार्य पद्धति का अनुभव हम ले ही रहे हैं। समाज के विभिन्न वर्गों में स्वार्थ व द्वेष के आधार पर दूरियाँ और दुश्मनी बनाने का काम स्वतन्त्र भारत में भी उनके द्वारा चल रहा है । उनके बहकावे में न फ़सते हुए, उनकी भाषा, पंथ, प्रांत, नीति कोई भी हो, उनके प्रति निर्मोही हो कर निर्भयतापूर्वक उनका निषेध व प्रतिकार करना चाहिए। शासन व प्रशासन के इन शक्तियों के नियंत्रण व निर्मूलन के प्रयासों में हमको सहाय्यक बनना चाहिए। समाज का सबल व सफल सहयोग ही देश की सुरक्षा व एकात्मता को पूर्णतः निश्चित कर सकता है।

समाज की सशक्त भूमिका के बिना कोई भला काम अथवा कोई परिवर्तन यशस्वी व स्थायी नहीं हो सकता. यह सर्वत्र अनुभव है । अच्छी व्यवस्था भी लोगों का मन बनाएं बिना अथवा लोगों ने मन से स्वीकार नहीं की तो चल नहीं पाती।

विश्व में आये अथवा लाये गये सभी बड़े व स्थायी परिवर्तनों में समाज की जागृति के बाद ही व्यवस्थाओं तथा तंत्र में परिवर्तन आया है । मातृभाषा में शिक्षा को बढ़ावा देने वाली नीति बननी चाहिए यह अत्यंत उचित विचार है, और नयी शिक्षा नीति के तहत उस ओर शासन/प्रशासन पर्याप्त ध्यान भी दे रहा है। परन्तु अपने पाल्यों को मातृभाषा में पढ़ाना अभिभावक चाहते हैं क्या? अथवा तथाकथित आर्थिक लाभ अथवा ब्तममत (जिसके लिए शिक्षा से भी अधिक आवश्यकता उद्यम, साहस व सूझबूझ की होती है) की मृग मरीचिका के पीछे चली अंधी दौड़ में अपने पाल्यों को दौड़ाना चाहते हैं? मातृभाषा की प्रतिष्ठा की अपेक्षा शासन से करते समय हमें यह भी देखना होगा कि हम हमारे हस्ताक्षर मातृभाषा में करते हैं या नहीं? हमारे घर पर नामफलक मातृभाषा में लगा है कि नहीं? घर के कार्य प्रसंगों के निमंत्रण पत्र मातृभाषा में भेजे जाते हैं या नहीं?

नयी शिक्षा नीति के कारण छात्र एक अच्छा मनुष्य बने, उसमें देशभक्ति की भावना जगे, वह सुसंस्कृत नागरिक बने यह सभी चाहते हैं । परन्तु क्या सुशिक्षित, संपन्न व प्रबुद्ध अभिभावक भी शिक्षा के इस समग्र उद्देश्य को ध्यान में रख कर अपने पाल्यों को विद्यालय महाविद्यालयों में भेजते हैं ? फिर शिक्षा केवल कक्षाओं में नहीं होती। घर में संस्कारों का वातावरण रखने में अभिभावकों की; समाज में भद्रता, सामाजिक अनुशासन इत्यादि का वातारण ठीक रखने वाले माध्यमों की, जननेताओं की तथा पर्व, त्यौहार, उत्सव, मेले आदि सामाजिक आयोजनों की भूमिका का भी बराबरी का महत्व होता है । उस पक्ष पर हमारा ध्यान कितना है? बिना उसके केवल विद्यालयीन शिक्षा कदापि

प्रभावी नहीं हो सकती है।

विविध प्रकार की चिकित्सा पद्धतियाँ समन्वित कर स्वास्थ्य की सस्ती, उत्तम गुणवत्ता की, सर्वत्र सुलभ तथा व्यापारिक मानसिकता से मुक्त व्यवस्था देने वाला स्वास्थ्य तंत्र शासन के द्वारा खड़ा हो यह संघ का भी प्रस्ताव है। शासन की प्रेरणा व समर्थन से भी व्यक्तिगत व सामाजिक स्वच्छता के, योग तथा व्यायाम के उपक्रम चलते हैं। समाज में भी ऐसा आग्रह रखने वाले, इन बातों का महत्व बताने वाले बहुत हैं । लेकिन इन सबकी उपेक्षा कर समाज अपने पुराने ढर्रे पर ही चलते रहा तो कौन सी ऐसी व्यवस्था है जो सबके स्वास्थ्य को ठीक रख सकेगी?

संविधान के कारण राजनीतिक तथा आर्थिक समता का पथ प्रशस्त हो गया, परन्तु सामाजिक समता को लाये बिना वास्तविक व टिकाऊ परिवर्तन नहीं आएगा, ऐसी चेतावनी पूज्य डॉ. बाबासाहब आंबेडकर जी ने हम सबको दी थी। बाद में कथित रूप से इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर कई नियम आदि बने। परन्तु विषमता का मूल तो मन में ही तथा आचरण की आदत में है। व्यक्तिगत तथा कौटुंबिक स्तर पर आपस में मित्रता के, सहज अनौपचारिक आनेजाने, उठने बैठने के संबंध बनते नहीं; तथा सामाजिक स्तर पर मंदिर, पानी, शमशान सब हिन्दुओं के लिए खुले नहीं होते, तब तक समता की बातें केवल स्वप्नों की बातें रह जाएंगी।

जो परिवर्तन तंत्र के द्वारा लाया जाए ऐसी हमारी अपेक्षा है, वह बातें हमारे आचरण में होने से परिवर्तन की प्रक्रिया को गति व बल मिलता है, वह स्थायी हो जाता है। ऐसा न होने से परिवर्तन प्रक्रिया अवरुद्ध हो सकती है और परिवर्तन स्थायित्व की ओर नहीं बढ़ता। परिवर्तन के लिए समाज की विशिष्ट मानसिकता को बनाना अनिवार्य पूर्व शर्त है। अपनी विचार परम्परा पर आधारित उपभोगवाद व शोषण से रहित विकास को साधने के लिए समाज से तथा स्वयं के जीवन से भोग वृत्ति व शोषक प्रवृत्ति को जड़ मूल से हटाना पड़ेगा।

भारत जैसे विशाल जनसंख्या वाले देश में आर्थिक तथा विकास नीति रोजगार– उन्मुख हो यह अपेक्षा स्वाभाविक ही कही जाएगी। परन्तु रोजगार यानि केवल नौकरी नहीं यह समझदारी समाज में भी बढ़ानी पड़ेगी। कोई काम प्रतिष्ठा में छोटा या हल्का नहीं है, परिश्रम, पूंजी तथा बौद्धिक श्रम सभी क महत्व समान है, यह मान्यता व तदनुरूप आचरण हम सबका होना पड़ेगा। उद्यमिता की ओर जाने वाली प्रवृत्तियों को प्रोत्साहन देना होगा। प्रत्येक जिले में रोजगार प्रशिक्षण की विकेन्द्रित योजना बने तथा अपने जिले में ही रोजगार प्राप्त हो सकें, गाँवों में विकास के कार्यक्रम से शिक्षा, स्वास्थ्य, यातायात आदि सुविधाएँ सुलभ हो जाएं, यह अपेक्षा सरकार से तो रहती ही है। परन्तु कोरोना की आपत्ति के समय कार्यरत रहने वाले कार्यकर्ताओं ने यह भी अनुभव किया है कि समाज का संगठित बल भी बहुत कुछ कर सकता है। आर्थिक क्षेत्र में काम करने वाले संगठन, लघु उद्यमी, कुछ सम्पन्न सज्जन, कला कौशल के जानकार, प्रशिक्षक तथा स्थानीय स्वयंसेवकों ने लगभग २७५ जिलों में स्वदेशी जागरण मंच के साथ मिलकर यह प्रयोग प्रारम्भ किया है। इस प्रारम्भिक अवस्था में ही रोज़गार सृजन में उल्लेखनीय योगदान देने में सफल हुए हैं, ऐसी जानकारी मिल रही है।

राष्ट्र जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में समाज के सहभाग का यह विचार व आग्रह शासन को उनके दायित्व से मुक्त करने के लिए नहीं, बल्कि राष्ट्र के उत्थान में समाज के सहभाग को साथ लेने की आवश्यकता तथा उसके लिए अनुकूल नीति निर्धारण की ओर इंगित करता है। अपने देश की जनसंख्या विशाल है, यह एक वास्तविकता है। जनसंख्या का विचार आजकल दोनों प्रकार से होता है। इस जनसंख्या के लिए उतनी मात्रा में साधन आवश्यक होंगे, वह बढ़ती चली जाए तो भारी बोझ– कदाचित असह्य बोझ बनेगी। इसलिए उसे नियंत्रित रखने का ही पहलू विचारणीय मानकर योजना बनाई जाती है । विचार का दूसरा प्रकार भी सामने आता है, उस में जनसंख्या को एक निधि – Asset – भी माना जाता है। उसके उचित प्रशिक्षण व अधिकतम उपयोग की बात सोची जाती है। पूरे विश्व की जनसंख्या को देखते हैं तो एक बात ध्यान में आती है। केवल अपने देश को देखते हैं तो विचार बदल भी सकता है। चीन ने अपनी जनसंख्या नियंत्रित करने की नीति बदलकर अब उसकी वृद्धि के लिए प्रोत्साहन देना प्रारंभ किया है। अपने देश का हित भी जनसंख्या के विचार को प्रभावित करता है। आज हम सबसे युवा देश हैं। आगे 50 वर्षों के पश्चात आज के तरुण प्रौढ़ बनेंगे, तब उनकी सम्हाल के लिए कितने तरुण आवश्यक होंगे यह गणित हमें भी करना होगा। देश का जन अपने पुरुषार्थ से देश को वैभवशाली बनाता है, साथ ही स्वयं का व समाज का जीवन निर्वाह भी सुरक्षित करता है। जनता के योगक्षेम के तथा राष्ट्रीय पहचान व सुरक्षा के अतिरिक्त और भी कुछ पहलुओं को यह विषय छूता है।

संतान संख्या का विषय माताओं के स्वास्थ्य, आर्थिक क्षमता, शिक्षा, इच्छा से जुड़ा है। प्रत्येक परिवार की आवश्यकता से भी जुड़ा है। जनसंख्या पर्यावरण को भी प्रभावित करती है।

सारांश में जनसंख्या नीति इतनी सारी बातों का समग्र व एकात्म विचार करके बने, सभी पर समान रूप से लागू हो, लोक प्रबोधन द्वारा इस के पूर्ण पालन की मानसिकता बनानी होगी। तभी जनसंख्या नियंत्रण के नियम परिणाम ला सकेंगे।

सन् 2000 में भारत सरकार ने समग्रता से विचार कर एक जनसंख्या नीति का निर्धारण किया था। उसमें एक महत्वपूर्ण लक्ष्य 2.1 के प्रजनन दर (TFR) को प्राप्त करना था। अभी 2022 में हर पाँच वर्ष में प्रकाशित NFHS की रिपोर्ट आई है। जहाँ समाज की जागरूकता और सकारात्मक सहभागिता तथा केंद्र एवं राज्य सरकारों के सतत समन्वित प्रयासों के परिणामस्वरूप 2.1 से भी कम लगभग 2.0 के प्रजनन दर पर आ गई है । जहाँ जनसंख्या नियंत्रण के प्रति जागरूकता और उस लक्ष्य की प्राप्ति की दिशा में हम निरंतर अग्रसर हैं, वहीं दो प्रश्न और भी विचार के लिए खड़े हो रहे हैं। समाज विज्ञानी और मनोवैज्ञानिकों के मत के अनुसार बहुत छोटे परिवारों के कारण बालक–बालिकाओं के स्वस्थ समग्र विकास, परिवारों में असुरक्षा का भाव, सामाजिक तनाव, एकाकी जीवन आदि अनेक चुनौतियों का भी सामना करना पड़ रहा है और हमारे समाज की संपूर्ण व्यवस्था का केंद्र परिवार व्यवस्था पर भी एक प्रश्नचिन्ह खड़ा हो गया है। वहीं एक दूसरा महत्व का प्रश्न जनसांख्यिकी असंतुलन का भी है। 75 वर्ष पूर्व हमने अपने देश में इस का अनुभव किया ही है और इक्कीसवीं सदी में जिन तीन नये स्वतंत्र देशों का अस्तित्व विश्व में हुआ, ईस्ट तिमोर, दक्षिणी सुडान और कोसोवा, वे इंडोनेशिया, सुडान और सर्बिया के एक भूभाग में जनसंख्या का संतुलन बिगड़ने का ही परिणाम है। जब–जब

किसी देश में जनसांख्यिकी असंतुलन होता है, तब – तब उस देश की भौगोलिक सीमाओं में भी परिवर्तन आता है। जन्मदर में असमानता के साथ साथ लोभ, लालच, जबरदस्ती से चलने वाला मतांतरण व देश में हुई घुसपैठ भी बड़े कारण हैं। इन सबका विचार करना पड़ेगा। जनसंख्या नियंत्रण के साथ साथ पांथिक आधार पर जनसंख्या संतुलन भी महत्व का विषय है, जिसकी अनदेखी नहीं की जा सकती।

प्रजातंत्र में प्रजा के मनोयोग से सहयोग का महत्व सर्वश्रुत है ही। नियमों का बनना, स्वीकार होना तथा अपेक्षा परिणाम तक पहुँचना उसी से होता है। जिन नियमों से त्वरित लाभ होते हैं, अथवा कालांतर में कोई लाभ अथवा स्वार्थसिद्धि दिखाई देती हो उन्हें समझाना नहीं पड़ता। परन्तु जब देश के हित में या दुर्बलों के हित में अपने स्वार्थ को छोड़ना पड़े, वहाँ इस त्याग के लिए जनता सदैव तैयार रहे, इस लिए समाज में स्व का बोध व गौरव जगाए रखने की आवश्यकता होती है।

यह स्व हम सबको जोड़ता है। क्योंकि वह हमारे प्राचीन पूर्वजों ने प्राप्त किये सत्य की प्रत्यक्षानुभूति का सीधा परिणाम है। "सर्व यद्भूतं यच्च भव्यं" उसी एक शाश्वत अव्यय मूल की अभिव्यक्ति मात्र है, इसीलिए अपनी विशिष्टता पर श्रद्धापूर्वक दृढ़ रहते हुए सभी की विविधता, विशिष्टता का सम्मान व स्वीकार करना चाहिए, यह बात सबको सिखाने वाला केवल भारत है। सब एक हैं, इसलिए सबको मिलजुल कर चलना चाहिए, मान्यताओं की विविधता हमको अलग नहीं करती। सत्य, करुणा, अंतर्बाह्य शुचिता, तथा तपस् का तत्वचतुष्टय सभी मान्यताओं को साथ चलाता है। सभी विविधताओं को सुरक्षित व विकासमान रखते हुए जोड़ता है। उसी को हमारे यहां धर्म कहा गया। इन्हीं चार तत्वों के आधार पर सम्पूर्ण विश्व के जीवन को समन्वय, संवाद, सौहार्द तथा शान्ति पूर्वक चला सकने वाले संस्कार देने वाली संस्कृति हम सबको जोड़ती है, विश्व को कुटुम्ब के नाते जोड़ने की प्रेरणा देती है। सृष्टि से लेकर हम सभी जीते हैं, फलते फूलते हैं। जीवने यावदादानं स्यात्प्रदानं ततोऽधिकम् की भावना हमें उसी से मिलती है। "वसुधैव कुटुंबकम" की यह भावना तथा "विश्वं भवत्येकं नीडम्", यह भव्य लक्ष्य हमें पुरुषार्थ की प्रेरणा देता है।

हमारे राष्ट्रीय जीवन का यह सनातन प्रवाह प्राचीन समय से इसी उद्देश्य से इसी रीति से चलता आया है। समय व परिस्थिति के अनुसार रूप, पथ तथा शैली बदलती गयी। परन्तु मूल विचार, गन्तव्य तथा उद्देश्य निरन्तर वही रहे हैं। इस पथ पर यह निरन्तर गति हमें अगणित वीरों के शौर्य और समर्पण से, असंख्य कर्मयोगियों के भीम परिश्रम से तथा ज्ञानियों की दुर्धर तपस्या से प्राप्त हुई है। उनको हम सब अपने जीवन में अनुकरणीय आदर्शों का स्थान देते हैं। वे हम सबके गौरव निधान हैं। वे हमारे समान पूर्वज हमारे जुड़ने का एक और आधार हैं।

उन सभी ने हमारी पवित्र मातृभूमि भारत वर्ष के ही गुणगान किये हैं। प्राचीन काल से सभी प्रकार की विविधता को ससम्मान स्वीकार कर साथ चलाने का हमारा स्वभाव बना; भौतिक सुख की परमावधि पर ही न रुकते हुए अपने अन्तरतम की गहराइयों को खंगालकर हमने अस्तित्व के सत्य को प्राप्त किया; विश्व को अपना ही परिवार मानकर सर्वत्र ज्ञान, विज्ञान, संस्कृति व भद्रता का प्रसार किया। इसका कारण यह हमारी मातृभूमि भारत ही है। प्राचीन काल में सुजल सुफल मलयजशीतल, इस भारत जननी ने प्राकृतिक रीति से सर्वथा सुरक्षित अपनी चतुःसीमा में जो सुरक्षा व निश्चिंतता हमें दी उसी का यह फल है। उस अखण्ड मातृभूमि की अनन्य भक्ति हमारी राष्ट्रीयता का मुख्य आधार है।

प्राचीन समय से भूगोल, भाषा, पंथ, रहन सहन, सामाजिक तथा राजनीतिक व्यवस्थाओं की विविधताओं के बावजूद समाज के नाते, संस्कृति के नाते, राष्ट्र के नाते हमारा एक जीवन प्रवाह अक्षुण्ण चलता रहा है। इस में सभी विविधताओं का स्वीकार है, सम्मान है, सुरक्षा है, विकास है। किसी को अपनी संकुचितता, कट्टरता, आक्रामकता व अहंकार के अतिरिक्त कुछ भी छोड़ना नहीं पड़ता। सत्य, करुणा, अंतर्बाह्य शुचिता व इन तीनों की साधना के अतिरिक्त कुछ भी अनिवार्य नहीं। भारत भक्ति, हमारे समान पूर्वजों के उज्ज्वल आदर्श व भारत की सनातन संस्कृति इन तीन दीपस्तंभों के द्वारा प्रकाशित व प्रशस्त पथ पर मिलजुलकर प्रेम पूर्वक चलना यही अपना स्व, अपना राष्ट्रधर्म है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के समाज को आवाह्न का प्रारंभ से यही आशय रहा है। आज यह अनुभव आता है कि उस पुकार को सुनने समझने को अब सब लोग तैयार हैं। अज्ञान, असत्य, द्वेष, भय, अथवा स्वार्थ के कारण संघ के विरुद्ध जो अपप्रचार चलता है उसका प्रभाव कम हो रहा है। क्योंकि संघ की व्याप्ति व समाज संपर्क में यानी संघ की शक्ति में लक्षणीय वृद्धि हुई है। दुनिया में सुने जाने के लिए सत्य को भी शक्तिशाली होना पड़ता है, यह जीवन का विचित्र वास्तव है। दुनिया में दुष्ट शक्तियाँ भी हैं, उनसे बचने के लिए व अन्यों को बचाने के लिए भी सज्जनों की संगठित शक्ति चाहिए।

संघ उपरोक्त राष्ट्र विचार का प्रचार – प्रसार करते हुए सम्पूर्ण समाज को संगठित शक्ति के रूप में खड़ा करने का काम कर रहा है। यही हिन्दू समाज के संगठन का काम है, क्योंकि उपरोक्त राष्ट्र विचार को हिन्दू राष्ट्र का विचार कहते हैं और वह है भी। इसलिए संघ उपरोक्त राष्ट्र विचार को मानने वाले सबका यानी हिन्दू समाज का संगठन, हिन्दू धर्म, संस्कृति व समाज का संरक्षण कर हिन्दू राष्ट्र की सर्वांगीण उन्नति के लिए, "सर्वेषां अविरोधेन" काम करता है।

अब जब संघ को समाज में कुछ स्नेह तथा विश्वास का लाभ हुआ है और उसकी शक्ति भी है तो हिन्दू राष्ट्र की बात को लोग

गम्भीरता पूर्वक सुनते हैं। इसी आशय को मन में रखते हुए परन्तु हिन्दू शब्द का विरोध करते हुए अन्य शब्दों का उपयोग करने वाले लोग हैं। हमारा उनसे कोई विरोध नहीं। आशय की स्पष्टता के लिए हम हमारे लिए हिन्दू शब्द का आग्रह रखते रहेंगे।

तथाकथित अल्पसंख्यकों में बिना कारण एक भय का हौवा खड़ा किया जाता है कि हम से अथवा संगठित हिन्दू से खतरा है। ऐसा न कभी हुआ है, न होगा। न यह हिन्दू का, न ही संघ का स्वभाव या इतिहास रहा। अन्याय, अत्याचार, द्वेष का सहारा लेकर गुंडागर्दी करने वाले समाज की शत्रुता करते हैं तो आत्मरक्षा अथवा आप्तरक्षा तो सभी का कर्तव्य बन जाता है। "ना भय देत काहू को, ना भय जानत आप", ऐसा हिन्दू समाज खड़ा हो यह समय की आवश्यकता है। यह किसी के विरुद्ध नहीं है। संघ पूरी दृढ़ता के साथ आपसी भाईचारा, भद्रता व शांति के पक्ष में खड़ा है।

ऐसी चिन्ताएँ मन में रखकर तथाकथित अल्पसंख्यकों में से कुछ सज्जन गत वर्षों में मिलने के लिए आते रहे हैं। उनसे संघ के कुछ अधिकारियों का संपर्क संवाद हुआ है, होते रहेगा। भारतवर्ष प्राचीन राष्ट्र है, एक राष्ट्र है। उसकी उस पहचान व परंपरा की धारा के साथ तन्मयतापूर्वक अपनी – अपनी विशिष्टता को रखते हुए हम सभी प्रेम सम्मान व शांति के साथ राष्ट्र की निः स्वार्थ सेवा मिलकर करते चलें। एक दूसरे के सुख – दुःख में परस्पर साथी बनें, भारत को जानें, भारत को मानें, भारत के बनें, यही एकात्म, समरस राष्ट्र की कल्पना संघ करता है। संघ का और कोई उद्देश्य या स्वार्थ इसमें नहीं है।

अभी पिछले दिनों उदयपुर में एक अत्यंत ही जघन्य एवं दिल दहला देने वाली घटना घटी। सारा समाज स्तब्ध रह गया। अधिकांश समाज दुःखी एवं आक्रोशित था। ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति न हो यह सुनिश्चित करना होगा। ऐसी घटनाओं के मूल में पूरा समाज नहीं होता। उदयपुर घटना के बाद मुस्लिम समाज में से भी कुछ प्रमुख व्यक्तियों ने अपना निषेध प्रगट किया। यह निषेध अपवाद बन कर ना रह जाए, अपितु अधिकांश मुस्लिम समाज का यह स्वभाव बनना चाहिए। हिन्दू समाज का एक बड़ा वर्ग ऐसी घटना घटने पर हिन्दू पर आरोप लगे तो भी मुखरता से विरोध और निषेध प्रगट करता है।

उकसाना कोई भी और कैसा भी हो, क़ानून एवं संविधान की मर्यादा में रहकर सदैव सबको अपना विरोध प्रगट करना चाहिए। समाज जुड़े – टूटे नहीं, झगड़े नहीं, बिखरे नहीं। मन–वचन–कर्म से यह प्रतिभाव मन में रखकर समाज के सभी सज्जनों को मुखर होना चाहिए। हम दिखते भिन्न और विशिष्ट हैं, इसलिए हम अलग हैं, हमें अलगाव चाहिए, इस देश के साथ, इस की मूल मुख्य जीवनधारा व पहचान के साथ हम नहीं चल सकते; इस असत्य के कारण "भाई टूटे धरती खोयी मिटे धर्मसंस्थान" यह विभाजन का ज़हरीला अनुभव लेकर कोई भी सुखी तो नहीं हुआ। हम भारत के हैं, भारतीय पूर्वजों के हैं, भारत की सनातन संस्कृति के हैं, समाज व राष्ट्रीयता के नाते एक हैं, यही हमारा तारक मंत्र है।

स्वाधीनता के ७५ वर्ष पूरे हो रहे हैं। हमारे राष्ट्रीय नवोत्थान के प्रारंभ काल में स्वामी विवेकानंद जी ने हमें भारत माता को ही आराध्य मानकर कर्मरत होने का आवाहन किया था। १५ अगस्त, १९४७ को पहले स्वतंत्रता दिवस तथा स्वयं के वर्धापन दिवस पर महर्षि अरविन्द ने भारतवासियों को संदेश दिया। उसमें उनके पांच सपनों का उल्लेख है। भारत की स्वतंत्रता व एकात्मता, यह पहला था। संवैधानिक रीति से राज्यों का विलय होकर एकसंध भारत बनने पर वे प्रसन्नता व्यक्त करते हैं। किन्तु विभाजन के कारण हिन्दू व मुसलमानों के बीच एकता के बजाय एक शाश्वत राजनीतिक खाई निर्माण हुई, जो भारत की एकात्मता, उन्नति व शांति के मार्ग में बाधक बन सकती है, इसकी उन्हें चिंता थी। जिस किसी प्रकार से जाए, विभाजन निरस्त होकर भारत अखंड बने यह उत्कट इच्छा वे जताते हैं। क्योंकि उनके अगले सभी स्वप्नों को – एशिया के देशों की मुक्ति, विश्व की एकता, भारत की आध्यात्मिकता का वैश्विक अभिमंत्रण तथा अतिमानस का जगत में अवतरण दृ साकार करने में भारत की ही प्रधानता होगी, यह वे जानते थे। इसलिए कर्तव्य का उनका दिया संदेश बहुत स्पष्ट है –

"राष्ट्र के इतिहास में ऐसा समय आता है जब नियति उसके सामने ऐसा एक ही कार्य, एक ही लक्ष्य रख देती है, जिस पर अन्य सबकुछ, चाहे वह कितना भी उन्नत या उदात्त क्यों न हो, न्यौछावर करना ही पड़ता है। हमारी मातृभूमि के लिए अब ऐसा समय आया है, जब उसकी सेवा के अतिरिक्त और कुछ भी प्रिय नहीं, जब अन्य सब उसी के लिए प्रयुक्त करना है। यदि आप पढ़ें तो उसी के लिए पढ़ो, शरीर, मन व आत्मा को उसकी सेवा के लिए ही प्रशिक्षित करो। अपनी जीविका इसलिए प्राप्त करो कि उसके लिए जीना है। सागर पार विदेशों में इसलिए जाओगे कि वहाँ से ज्ञान लेकर उससे उसकी सेवा कर सकें। उसके वैभव के लिए काम करो। वह आनंद में रहे इसलिए दुःख झेलो। इस एक परामर्श में सब कुछ आ गया।"

भारत के लोगों के लिए आज भी यही सार्थक संदेश है।
गांव गांव में सज्जन शक्ति। रोम रोम में भारत भक्ति।
यही विजय का महामंत्र है। दसों दिशा से करें प्रयाण।।
जय जय मेरे देश महान ।।।। भारत माता की जय।।

भागीदारी लोकतंत्र की आधारशिला

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का स्पष्ट मानना है कि हमारी ताकत जनता की ताकत में है और हमारी ताकत हमारे देश के प्रत्येक नागरिक में निहित है। प्रधानमंत्री का यह वक्तव्य इस बात का द्योतक है कि लोकतंत्र भारत की प्राणवायु में है। जन–भागीदारी की अवधारणा का अर्थ है, नीतियों के कार्यान्वयन में जनता की सामूहिक भूमिका। भारत जैसे बड़ी आबादी वाले देश में श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में चल रही केंद्र सरकार की नीतियों को लागू करने का केंद्रीय पहलू जनशक्ति का समुचित और बेहतर उपयोग करना रहा है। उन्होंने जनता को अपना काम करने के लिए दृढ़ता से प्रेरित किया है। विभिन्न मुद्दों पर सरकार का ध्यान आकर्षित करने के लिए प्रेरित किया है। साथ ही, शासन की सहायता के लिए जनता को प्रेरित करके प्रधानमंत्री ने जन–भागीदारी की इस विशाल शक्ति से होने वाले लाभों को जमीन पर उतारकर दिखाया है।

भारत जैसे बड़ी आबादी वाले देश में श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में चल रही केंद्र सरकार की नीतियों को लागू करने का केंद्रीय पहलू जनशक्ति का समुचित और बेहतर उपयोग करना रहा है

जन संवाद की सतत प्रक्रिया के बिना जन–भागीदारी अधूरी है। वास्तविक सहभागी शासन, जमीनी हकीकत को समझने के लिए जनता के साथ नियमित संवाद करने की प्रक्रिया पर आधारित है, जिसके बाद मुद्दों के विश्लेषण के आधार पर पॉलिसी पेपर्स तैयार किए जाते हैं और फिर ज्वलंत मुद्दों से निपटने के लिए सही सुझाव दिए जाते हैं। आदर्श रूप से नीतियों के कार्यान्वयन और लाभार्थियों से मिले फीडबैक के आधार पर नीतियों को लागू किया जाता है। विभिन्न माध्यमों से इस सरकार ने लोगों के जीवन को आसान बनाने के लिए जनता और सरकार के बीच इस संवाद को निरंतर बनाए रखने का व्यापक ध्यान रखा है। इसका एक सटीक उदाहरण 'पीएम फसल बीमा योजना' है।

जगत प्रकाश नड्डा

साल 2016 में प्रधानमंत्री द्वारा फसल बीमा के लिए दो प्रमुख योजनाओं के संयोजन और सतत एवं टिकाऊ कृषि सुनिश्चित करने के बाद इसे साल 2019–2020 में फिर से लॉन्च किया गया था। संशोधित योजना विभिन्न ऑफलाइन और ऑनलाइन तरीकों के माध्यम से किसानों के लिए समर्पित योजना है, जो उनकी विभिन्न समस्याओं का समाधान करती है। यह कृषि क्षेत्र में परिवर्तनकारी बदलाव लाने के लिए संवाद और सहभागिता की शक्ति का एक सटीक उदाहरण है।

जनता को अपने लक्ष्य तक ले जाने के प्रयास में प्रधानमंत्री मोदी निर्विवाद रूप से सफल रहे हैं। लोक–कल्याणकारी विजन पर आधारित उनके प्रत्येक आह्वान को देश ने हाथों–हाथ लिया है। आम लोगों के जीवन को सहज व सरल बनाने के उनके चिंतन में संपूर्ण देश स्वतः स्फूर्त रूप से जुड़ जाता है। उनका हर संबोधन सदैव आमजन के समग्र विकास के परिप्रेक्ष्य में होता है। इसी कारण प्रधानमंत्री श्री मोदी का आह्वान राष्ट्रीय अभियान, संकल्प व लक्ष्य तक जाता है।

एक राजनीतिज्ञ के रूप में नीतियों और लाभों को देश के हरेक नागरिक तक पहुंचाने के लिए प्रत्येक को इसमें शामिल करने का पीएम मोदी का संकल्प और उनकी दूरदर्शिता को गत आठ वर्षों में देश ने निकट से अनुभव किया है। उदाहरण के लिए खुले में शौच के मुद्दे को लें। प्रधानमंत्री के रूप में स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर लाल किले के अपने पहले उद्बोधन में उन्होंने सभी नागरिकों से 'स्वच्छ भारत अभियान' में भाग लेने का आह्वान किया था। केवल 60 महीनों में 11 करोड़ से अधिक शौचालयों के निर्माण के साथ एक जन–आंदोलन, जो अब देश में एक लाख से भी अधिक खुले में शौच मुक्त गांवों में परिणत हो चुका है, एक ऐसा कारनामा है, जिसने दुनिया को चकित कर दिया। हालांकि, यह सिर्फ एक स्वच्छता मिशन की तरह लग सकता है, लेकिन इसने देश की मातृशक्ति का सम्मान बढ़ाया है, उनकी सुरक्षा भी सुनिश्चित की है, इससे बालिका शिक्षा को भी बढ़ावा मिला है।

एक दूसरा उदाहरण 'जल जीवन मिशन' का हम ले सकते हैं, जिसने अब तक गांवों में 10 करोड़ से अधिक घरों में नल जल कनेक्शन सुनिश्चित किए हैं। 200 करोड़ कोविड टीके लगाने का रिकॉर्ड केवल 18 महीनों में हासिल किया गया। यह कोई मामूली उपलब्धि नहीं है। लोकप्रिय कार्यक्रम 'मन की बात' को तो एक सामाजिक क्रांति करार दिया गया है (जो सही भी है), उसका आधार भी जन–भागीदारी ही है। एक अन्य उल्लेखनीय जन–आंदोलन हैकृ'वोकल फॉर लोकल।' प्रधानमंत्री द्वारा स्वदेशी व्यापार को बढ़ावा देने और स्थानीय व्यवसायों को प्रोत्साहित करने का एक स्पष्ट आह्वान लोगों में जागरूकता पैदा करने और उद्यमिता को बढ़ावा देने के मामले में एक लंबा सफर तय कर चुका है। इस जन–आंदोलन ने छोटे व्यवसायों को सशक्त बनाया है, देश के दूरदराज के हिस्सों में स्टार्टअप को बनाए रखने और पारंपरिक शिल्प को पुनर्जीवित करने में भी मदद की है।

'वोकल फॉर लोकल टॉयज' अर्थात स्थानीय खिलौने को प्राथमिकता देने की प्रधानमंत्री श्री मोदी की पहल खिलौनों के निर्माण में 'आत्मनिर्भर भारत अभियान' का ही एक अंग है, जिसके सकारात्मक परिणाम मिलने शुरू हो गए हैं। देश में कई खिलौना उत्पादक समूह स्थापित हुए हैं। भारतीय संस्कृति और लोकाचार पर आधारित खिलौनों को विकसित करने के लिए नवीन विचारों को 'क्राउडसोर्स' करने के लिए 'टॉयकैथॉन' जैसे आयोजनों ने गति पकड़ी है। खिलौनों को बीआईएस (भारतीय प्रमाणन ब्यूरो) मानक के अनुसार प्रमाणित किया जाना सभी निर्माताओं के लिए अनिवार्य हो गया है, जिससे कई चीनी प्रतिस्पर्धी समाप्त हो गए हैं। वित्त वर्ष 2019–22 में खिलौनों के आयात में 70 प्रतिशत की कमी और निर्यात में 61 प्रतिशत की वृद्धि हुई। भारतीय खिलौनों का निर्यात रिकॉर्ड ऊंचाई तक पहुंचा है, यह इस बात का प्रमाण है कि एक संकल्पबद्ध राष्ट्र क्या नहीं कर सकता है!

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का मानना है कि लोकतंत्र केवल एक सरकार को पांच साल के लिए अनुबंध नहीं देता, बल्कि वास्तव में यह जन–भागीदारी है। उन्होंने देश के नागरिकों में जो अटूट विश्वास दिखाया है, उसका अकल्पनीय सकारात्मक परिणाम सामने आया है। जब नीतियां अंतिम पायदान पर खड़े आखिरी व्यक्ति तक पहुंचती हैं, तब लोकतंत्र को वास्तव में सफल माना जाता है। इस प्रकार, प्रधानमंत्री श्री मोदी के आह्वान का स्पष्ट सार यह है कि सभी की भागीदारी से ही सभी की समृद्धि होती है।

जन आकांक्षाओं को पूर्ण करते प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी

लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था की विशेषताओं के संदर्भ में अमेरिकी राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन का प्रसिद्ध वाक्य "Of the people, By the people, For the people" है। भारतीय संविधान निर्माताओं ने भी इसी को आधार माना कि लोकतंत्र का उद्देश्य "जनता का, जनता द्वारा, जनता के लिए" हैं। अर्थात् हमारी समस्त व्यवस्थाओं का आधार जनता है। जनता के द्वारा का अर्थ है कि जनता के वोट से जन प्रतिनिधियों का चयन होगा एवं चयनित जनप्रतिनिधि शासक के सूत्र सम्हाल कर नीति बनाते हुए जनता के कल्याण के लिए कार्य करेंगे। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि जनता केवल वोट देने तक ही सीमित रहेगी। जनता देश के विकास में सक्रिय योगदान दे, वह सही जनप्रतिनिधियों का चयन करें, इसके लिए वह स्वार्थी न हो, क्षुद्र वृतियों से दूर रहे अर्थात निःस्वार्थ, राष्ट्रभक्त, शिक्षित एवं संस्कारित हों। जनता में भविष्य के लिए श्रेष्ठ भारत बनाने का स्वप्न एवं संकल्प रहना आवश्यक है। यह कार्य उचित शिक्षा, नैतिक संस्थान एवं जन नेताओं के श्रेष्ठ आचरण के द्वारा होना संभव है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने समाज में यह संकल्प जगाने के लिए स्वयं का आदर्श उदाहरण प्रस्तुत किया है। विकास में सामान्य जन की सहभागिता मोदीजी की अनुकरणीय पहल है। भारत भविष्य में विश्व में श्रेष्ठ होगा, यह विश्वास भारतीय जनमानस में जागृत हुआ है।

शिव प्रकाश

स्वयं का उदाहरण – भारतीय जनसंघ (भारतीय जनता पार्टी) के तत्व द्रष्टा पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी से जब यह प्रश्न पूछा गया कि आप राजनीति में क्यों हैं तब उनका उत्तर था कि "नेता शब्द की विकृत हुई छवि के स्थान पर नेता शब्द की सही छवि स्थापित करने के लिए।"

राजनीतिक नेतृत्व के स्वार्थपूर्ण, विभाजित दृष्टि एवं वोट प्राप्ति के लिए गिरते व्यवहार के कारण समाज में नेताओं के प्रति अनास्था का वातावरण बना है। जो नेतृत्व समस्याओं के समाधान का माध्यम होने चाहिए था, जनता उन्हें ही समस्या मानने लगी। गुजरात के मुख्यमंत्री एवं 2014 के बाद देश के प्रधानमंत्री रहते हुए श्री नरेन्द्र मोदी ने अपना उदाहरण जिस प्रकार से प्रस्तुत किया, उससे जनता को लगने लगा कि यह व्यक्ति ही हमारी आकांक्षा पूर्ति का माध्यम हो सकता है। कठोर परिश्रम, पारदर्शी छवि, प्रत्येक संकट में सदैव अग्रसर एवं आवश्यकता पड़ने पर कठोर निर्णय यह सभी विशेषताएं मोदीजी को शेष में कुछ विशेष बनाती हैं। बिना सुरक्षा घेरे के लाल किले का संबोधन उनकी निर्भीकता के साथ–साथ जनता में भी निर्भयता का वातावरण तैयार करता है। मेट्रो ट्रेन में सामान्य नागरिक के समान यात्रा, बच्चों के साथ घुलना–मिलना एवं नागरिकों से संवाद उनकी सहजता एवं सादगी को दर्शाता है। भ्रष्टाचार पर कठोर प्रहार ने भ्रष्टाचारियों में भय एवं गरीबों में एक विश्वास का वातावरण तैयार किया है। इसी का उदाहरण हमें कोरोना काल में देखने को मिला कि जब दुनिया के देश अपने यहां कर्फ्यू का पालन कराने के लिए अर्धसैनिक बलों का सहारा ले रहे थे, तब प्रधानमंत्री मोदीजी के दूरदर्शन पर एक आह्वान मात्र से भारत में स्वतः स्फूर्त जनता कर्फ्यू लगा एवं घंटे–घड़ियाल, बर्तन एवं शंखनाद आदि के माध्यम से एकजुटता तथा मोदीजी के प्रति अपना विश्वास व्यक्त किया। भारतीय वैज्ञानिकों द्वारा निर्मित **'मेड इन इंडिया'** वैक्सीन के प्रति जब हमारे देश के विरोधी दलों के नेता भ्रम फैला रहे थे, तब प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने स्वयं वैक्सीन लेकर भ्रम को दूर करने का कार्य किया। जिसका परिणाम है कि अब भारत 200 करोड़ से भी अधिक वैक्सीनेशन वाला देश बन गया है और हम निर्भय होकर कोरोना के संकट से बाहर आ गए हैं।

जनता केवल वोट तक सीमित न रहे, उसका विकास एवं समस्याओं के समाधान में सक्रिय सहभाग होने से ही हम आगे बढ़ सकते हैं। इस तथ्य को प्रधानमंत्री मोदीजी ने अच्छी प्रकार समझा

समस्या समाधान एवं विकास में जन सहभागिता – जनता केवल वोट तक सीमित न रहे, उसका विकास एवं समस्याओं के समाधान में सक्रिय सहभाग होने से ही हम आगे बढ़ सकते हैं। इस तथ्य को प्रधानमंत्री मोदीजी ने अच्छी प्रकार समझा। उनके भाषणों में आया प्रसिद्ध वाक्य 130 करोड़ भारतवासी जब एक कदम आगे बढ़ाते हैं, तब भारत 130 करोड़ कदम आगे बढ़ता है उनकी जनता में गहरी आस्था को प्रकट करता है। स्वच्छता अभियान, बेटी बचाओ– बेटी पढ़ाओ, नमामि

गंगे, कोरोना काल का सेवा कार्य, पर्यावरण संरक्षण के लिए वृक्षारोपण की प्रेरणा एवं अभियान, तालाबों की सफाई, वैक्सीनेशन में जनसहभागिता, टी०बी० मुक्त भारत के लिए 'एक रोगी–एक पालक' योजना आदि के माध्यम से उन्होंने समाज में कर्तव्य बोध जगाने में सफलता प्राप्त की है। स्वयं भी इन कार्यों के प्रेरणा के लिए वह समुद्र किनारे कूड़ा–करकट उठाते, हाथ में झाडू लेकर सफाई करते दिखाई देते हैं।

भारतीय वैज्ञानिकों में प्रेरणा का परिणाम हुआ कि हम अपनी वैक्सीन बनाने में सफल हुए। दीपावली के दिन सैनिकों के मध्य उपस्थित होकर प्रेरणा देने का परिणाम हुआ कि प्रत्येक सैनिक सीमा पर साहस के साथ खड़ा है। उद्योग जगत प्रेरित होने का परिणाम हुआ कि हम पीपी किट एवं वेंटीलेटर बनाने में अग्रणी हो गये। आत्मनिर्भर संकल्प का परिणाम हुआ कि हम दुनिया में अर्थव्यवस्था में पांचवें पायदान पर आ गए। मेक इन इंडिया एवं मेक फॉर वर्ल्ड पॉलिसी का परिणाम हुआ कि अब हम सुरक्षा क्षेत्र में भी निर्यात वाले देश हो गए। अब महिला, उद्योग जगत, किसान, मजदूर, सैनिक, शिक्षक, युवा, गरीब, पिछड़े सभी को लगता है कि मोदीजी ही हमारी आकांक्षाओं की पूर्ति का माध्यम बनेंगे। इस कारण समाज का प्रत्येक वर्ग देश के विकास में सहायक हो रहा है। लाल किले की प्राचीर से उनका आह्वान कि हमारी पॉलिसी, प्रोसेस एवं प्रोडक्ट उत्तम से उत्तम हो, सभी वर्गों के लिए प्रेरक शब्द है।

एक भारत श्रेष्ठ भारत की जन अनुभूति – प्रसिद्ध जननेता संपूर्ण क्रांति के महानायक जयप्रकाश नारायण ने कहा, "जब तक जनता में समुचित नैतिकता एवं आध्यात्मिक गुण विकसित नहीं होते, तब तक सर्वोत्तम संविधान व राजनीतिक प्रणालियां भी लोकतंत्र को सफल नहीं बना सकती।"

उपरोक्त का विचार यदि हम करते हैं तब मोदीजी ने अपने व्यवहार के द्वारा समाज में इन गुणों के विकास का प्रयास किया। संविधान एवं संसद की सीढ़ियों को मस्तक झुका कर प्रणाम, योग विद्या का संवर्धन, आध्यात्मिक एवं धार्मिक स्थानों पर अपनी श्रद्धा व्यक्त करने के लिए उपस्थिति, समाज में नैतिकता एवं आध्यात्मिकता विकसित करती है। 'बंधुत्व' भाव जागरण के लिए हम एक देश के वासी 130 करोड़ भारतीयों का आह्वान, उच्च स्वर में सर्वत्र 'भारत मां की जय' का उद्घोष, सामाज में देशभक्ति एवं बंधुत्व भाव जागृत करता है। नई शिक्षा नीति भी नैतिक गुणों के विकास का माध्यम बनेगी। लाल किले से उनका आह्वान गुलामी की मानसिकता के सभी प्रतीकों को समाप्त करना है, समाज में एक नए स्वाभिमान को जागृत करेगा। प्रधानमंत्री आवास 7 **R-C-R** अब लोक कल्याण मार्ग हो गया है। राजपथ कर्तव्य पथ के नाम से विभूषित हुआ है। इन सभी का परिणाम है कि भारतीय जनमानस संकुचित भावों से ऊपर उठकर स्वाभिमान के साथ खड़ा हो रहा है।

भविष्य के लिए जन संकल्प – जब जनता के सम्मुख कोई लक्ष्य रहता है। तब सामान्य जनता में भी असामान्य कर्तृत्व प्रकट होता है। समाज के सभी वर्गों एवं भगौलिक क्षेत्रों से स्वतंत्रता के आंदोलन में सक्रियता इसी का उदाहरण है। दुनिया के देश भी इसी संकल्प शक्ति से आगे बढ़े हैं। आजादी के अमृत महोत्सव में तिरंगा यात्रा में यह संकल्प पुनः प्रकट हुआ। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने आर्थिक क्षेत्र में हमारी अर्थव्यवस्था 5 ट्रिलियन करने का लक्ष्य रखा है। देश इस संकल्प को लेकर आगे बढ़ता दिख रहा है।

जब हम देश की स्वतंत्रता के 100 वर्षों का महोत्सव मना रहे होंगे, तब हमारा देश कैसा होगा यह स्वप्न देश की जनता देख रही है। 25 वर्षों के अमृतकाल का उपयोग अपने देश को गौरवशाली देश बनाने के लिए हो, यह संकल्प जनता में जागृत होना चाहिए। गरीबी से मुक्त आर्थिक संपन्न, शिक्षा में अग्रणी, सुरक्षित, समरस, सांस्कृतिक क्षेत्र में विश्व का सही पथ का दर्शन कराने वाला भारत हम बनाएंगे, यही संकल्प होना चाहिए। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जनता में यह संकल्प जगाने के लिए प्रयासरत हैं, परिश्रम की पराकाष्ठा भी कर रहे हैं। हमारा एवं उनका संकल्प एक बने इसकी आवश्यकता है। परमात्मा उनको सुदीर्घ आयु प्रदान करें, जन्मदिवस पर यही प्रार्थना है।

देश में अब 981 संरक्षित क्षेत्र

वर्ष 2014 में संरक्षित क्षेत्रों का जो कवरेज देश के कुल भौगोलिक क्षेत्र का 4.90 प्रतिशत था, वह अब बढ़कर 5.03 प्रतिशत हो गया है। वर्ष 2014 में देश में जहां कुल 1,61,081.62 वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल के साथ 740 संरक्षित क्षेत्र थे, वहीं अब कुल 1,71,921 वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल के साथ 981 संरक्षित क्षेत्र हो गए हैं।

पिछले चार वर्षों में वन और वृक्षों के कवरेज में 16,000 वर्ग किलोमीटर की वृद्धि हुई है। भारत दुनिया के उन चंद देशों में शामिल है जहां वन क्षेत्र लगातार बढ़ रहा है। कम्युनिटी रिजर्व की संख्या में भी वृद्धि हुई है। वर्ष 2014 में जहां सिर्फ 43 कम्युनिटी रिजर्व थे, 2019 में उनकी संख्या बढ़कर 100 से भी अधिक हो गई है।

भारत में 52 टाइगर रिजर्व हैं, जोकि 18 राज्यों के लगभग 75,000 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैले हुए हैं। यहां दुनिया के लगभग 75 प्रतिशत जंगली बाघ बसते हैं। भारत ने लक्षित वर्ष 2022 से चार साल पहले 2018 में ही बाघों की संख्या को दोगुना करने का लक्ष्य हासिल कर लिया। भारत में बाघों की संख्या 2014 में 2,226 से बढ़कर 2018 में 2,967 हो गई है।

एशियाई शेरों की संख्या में 28.87 प्रतिशत की वृद्धि दर (अब तक की सबसे अधिक वृद्धि दरों में से एक) के साथ निरंतर वृद्धि हुई है। एशियाई शेरों की संख्या 2015 में 523 से बढ़कर 674 हो गई है।

भारत में अब (2020) तेन्दुओं की संख्या 12,852 है, जबकि 2014 के पिछले अनुमानों के अनुसार यह संख्या 7910 ही थी। तेन्दुओं की संख्या में 60 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि दर्ज की गई है।

गुलामी के अहसास से आजादी

भारत के धरती और आकाश केसरिया हो गए हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत का आत्मविश्वास सातवें आसमान पर है। अब भारत की ओर दुनिया की कोई भी महाशक्ति आंख नहीं उठा सकती। एक नई तरह का सांस्कृतिक पुनर्जागरण चल रहा है। हम भारत के लोग अपनी विशेष संस्कृति के कारण दुनिया के अद्वितीय राष्ट्र हैं। विदेशी सत्ता के दौरान यहां धर्म, संस्कृति और सांस्कृतिक प्रतीकों के अपमान का वातावरण था। भारतीय ज्ञान परंपरा को अन्धविश्वास कहा जा रहा था। पश्चिम से आयातित सेकुलर विचार ने भारतीय परंपरा को अपमानित करने का पाप किया था। हिन्दू होना अपमानजनक था। मोदी ने भारत के स्वाभाविक विचार प्रवाह को नेतृत्व दिया। धार्मिक सांस्कृतिक प्रतीक गर्व के विषय बनें। मोदी ने काशी विश्वनाथ कॉरिडोर के उदघाटन कार्यक्रम में श्रेष्ठ भारत का बिगुल फूंका। सांस्कृतिक कार्यक्रम से चिढ़े कथित प्रगतिशील सेकुलर तत्व मोदी पर हमलावर थे। कथित सेकुलर खेमें ने प्रधानमंत्री के कार्यक्रम को सेकुलर विरोधी बताया था। कहा था कि, मोदी ने मंदिर के धार्मिक कार्यक्रम में हिस्सा लेकर संविधान में उल्लिखित सेकुलर भावना का अपमान किया है। मोदी अपनी धुन के पक्के हैं। प्रधानमंत्री के रूप में उन्होंने भारत का सर्वांगीण विकास किया है। भारतीय धर्म साधना व संस्कृति को भी लगातार मजबूती दी है।

हृदय नारायण दीक्षित

यूरोपीय कालगणना में ''ईसा के पूर्व व ईसा के बाद'' समय का विभाजन है। समय विभाजन की इस धारणा में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का नाम जुड़ गया है। भारत के संदर्भ में धर्म संस्कृति और लोकमंगल मोदी के पूर्व व मोदी के समय विचारणीय हैं। मोदी के पहले भारत का मन उदास था, अब मोदी के समय भारत का मन उल्लास में है। मोदी के पहले भारत का मन आत्मविश्वासहीन था, अब मोदी के समय भारत आत्मनिर्भर हो रहा है। राष्ट्रजीवन के सभी क्षेत्रों में उमंग, उत्साह का वातावरण है। भारत आत्मविश्वास से भरा पूरा है। धर्म संस्कृति को लेकर मोदी के पहले हीन भाव था। विदेश आयातित सेकुलर पंथ का प्रभाव था। राजनैतिक वातावरण अल्पसंख्यकवादी था। अब मोदी के समय राष्ट्र सर्वोपरिता का वातावरण है। सबका साथ सबका विकास प्रत्यक्ष है। मोदी विरल हैं, स्वभाव से संवेदनशील तरल हैं। उनके 'मन की बात' पर राष्ट्र का भरोसा है। संसद संवैधानिक जनप्रतिनिधि सदन है। प्रधानमंत्री के रूप में वे पहली दफा संसद पहुंचे। उन्होंने संसद को साष्टांग प्रणाम किया। मोदी के पहले ऐसा दूसरा उदाहरण नहीं मिलता। जम्मू कश्मीर की विशेष संवैधानिक स्थिति (अनु.370) समूचे राष्ट्र के लिए चिंता का विषय थी। इसकी समाप्ति राष्ट्रवादियों की गहन अभिलाषा थी। मोदी के नेतृत्व में इस व्यवस्था का निरसन हुआ। इतिहास देवता ने मोदी के कर्म संकल्प को सम्मान जनक ढंग से अपने अंतः स्थल में संरक्षित किया है। मोदी अंतर्राष्ट्रीय नेता हैं।

योग सम्पूर्ण विज्ञान है। मोदी विरोधी योग विज्ञान पर भी आक्रामक रहे हैं। पतञ्जलि (लगभग 185 – 184 ई०पू०) ने योग सूत्र लिखे थे। योग विश्व को भारतीय ध्यान साधना का अद्वितीय उपहार है। मोदी ने संयुक्त राष्ट्र में योग की मान्यता का प्रस्ताव किया। मोदी के प्रस्ताव को 170 से ज्यादा देशों का समर्थन मिला। इनमें 47 मुस्लिम देश हैं। 21

जून अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस घोषित किया गया। उन्होंने सेकुलरपंथियों की परवाह न करते हुए अयोध्या के श्रीरामजन्मभूमि के शिलान्यास में हिस्सा लिया। श्रीराम जन्मभूमि मंदिर राष्ट्र का स्वप्न था। स्वप्न सच हो रहा है। वाराणसी में वे गंगा आरती में सम्मिलित हुए। उन्होंने केदारनाथ मंदिर में 15 घंटे साधना की। वे दुनिया के सभी देशों में अपनी यात्रा के दौरान भारत के सांस्कृतिक प्रतीकों की प्रतिष्ठा बढ़ाते हैं। वे इस विशाल और प्राचीन देश की मूल चेतना को प्रतिनिधित्व देते हैं। वे बांग्लादेश की यात्रा में गए। ढाकेश्वरी मंदिर पहुंचे। देवी की उपासना की। इसी तरह नेपाल के पशुपतिनाथ मंदिर गए। पूजा और उपासना की। धर्म संस्कृति के प्रति सेकुलरों द्वारा बढ़ाया गया हीन भाव समाप्त हो रहा है। लोक में प्राचीन संस्कृति के प्रति आदर व आत्मविश्वास बढ़ा है।

मंदिर भारतीय साधना के शिखर कलश हैं। मंदिर भारत के लोगों को आश्वस्ति देते हैं। सेकुलरपंथी मंदिर के नाम पर चिढ़ते हैं। लेकिन मोदी अपनी सांस्कृतिक प्रतिबद्धता से समझौता नहीं करते। उन्होंने करतारपुर साहिब में श्रद्धालुओं के आवागमन की सुविधा बहाल कराई। कैलाश मानसरोवर के तीर्थ यात्री अव्यवस्था से परेशान थे। चीन में होने के कारण इसकी व्यवस्था कठिन थी। डा० राम मनोहर लोहिया की बात याद आती है। लोहिया जी ने कहा था कि "दुनिया में ऐसी कोई कौम नहीं जो अपने सबसे बड़े देवता शिव को परदेस में बसा दे। लेकिन यह बहुत दिन नहीं चलेगा। भारत की गद्दी पर शक्तिहीन और कमजोर ही नहीं बैठे रहेंगे।" एक दिन ऐसा आएगा जब सब बदल जाएगा। वाकई अब यह समय आ गया है। मोदी ने कैलाश मानसरोवर यात्रा को आसान बनाया है। मोदी जहां जहां जाते हैं, वहां वहां भारत की संस्कृति का ध्वज ऊंचा करते हैं।

गीता भारतीय दर्शन का प्रतिनिधि ग्रंथ है। मोदी ने अनेक राष्ट्राध्यक्षों को गीता भेंट की है। मोदी पर सारी दुनिया का भरोसा बढ़ा है। हाल ही में उन्होंने रूस के राष्ट्रपति से कहा यह समय युद्ध का नहीं है। युद्ध से कोई लाभ नहीं होता। प्रधानमंत्री ने अपने अभियानों से सिद्ध कर दिया है कि धर्म और संस्कृति की पक्षधरता और प्रतिबद्धता किसी भी रूप में साम्प्रदायिकता नहीं है। मंदिर जाना रूढ़िवादिता नहीं है। गंगा जैसी पवित्र नदियों को प्रणाम करना पिछड़ापन नहीं है। श्रीराम, श्रीकृष्ण और शिव की प्रत्यक्ष उपासना रूढ़िवादिता नहीं है। देश काल वातावरण बदल चुका है। मोदी ने भारत की जीवन शैली और प्रतीकों को प्रतिष्ठित किया है। इसका सर्वव्यापी प्रभाव हुआ है। अब हिन्दू और हिन्दुत्व की उपेक्षा संभव नहीं है। सेकुलर राजनीति में सक्रिय वरिष्ठ महानुभाव भी हिन्दू प्रतीकों से जुड़ रहे हैं। हिन्दुत्व से अलग रहकर राजनीतिक क्षेत्र में भी कोई संभावना नहीं है। राहुल गांधी भी हिन्दू होने का प्रचार कर चुके हैं। इस राजनीति द्वारा जनेऊ भी दिखाए जा रहे हैं।

मोदी के परिश्रम का परिणाम है कि हिन्दू मान्यताएं सर्वमान्य हो रही हैं। सबसे बड़ी बात है कि भारतीय विचार के विरोधी सेकुलर पंथ की विदाई तय हो चुकी है। कला के क्षेत्र में भी मोदी के सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का जादू है। पहले सिनेमा के कथानक में मंदिरों और महंतों को अपमानजनक ढंग से प्रस्तुत किया जाता था। अब भारत के नए वातावरण में हिन्दुओं का मजाक बनाने वाले कथानक पसंद नहीं किये जाते। पूरे भारत का वातावरण बदल गया है। संस्कृति तत्व सत्य सिद्ध हो चुके हैं। एक नई तरह का नवजागरण गठित हो रहा है। इस राष्ट्र जागरण में भारत की रीति की प्रतिष्ठा है। भारत की प्रीति का अभिनन्दन है। भारत की नीति की प्रतिष्ठा है। यह सब काम आसान नहीं था। पहले हिन्दू होना पीड़ादाई था। अब हिन्दू होना सौभाग्यशाली होना है। यह नामुमकिन था लेकिन मोदी के कारण मुमकिन हो चुका है। मोदी ने वाकई में चमत्कार किया है। समूचा विश्व भारत की लगातार बढ़ रही प्रतिष्ठा को ध्यान से देख रहा है। मोदी के पांच प्रण – '2047 तक विकसित भारत', 'गुलामी के अहसास से आजादी', 'विरासत पर गर्व', 'एकता व एकजुटता पर जोर' व 'नागरिकों का कर्तव्य' – भारत के प्रण संकल्प हैं। राष्ट्र इनसे प्रतिबद्ध है।

स्वच्छता स्वावलम्बन ''आत्म निर्भर भारत'' के संकल्प

भारतीय जीवन पद्धति में सेवा परमोधर्मः है। सेवा ही साधना है ''सेवा है यज्ञकुंड समिधा सम हम जले'' का संकल्प है। राजनीति में लोकसेवा, जन सेवा ही लोक कल्याण का मार्ग है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के जन्मदिन 17 सितम्बर से प्रारम्भ हुआ सेवा पखवाड़ा महात्मा गांधी जयंती पर स्वच्छता अभियान तथा स्वावलम्बन की आधार खादी के क्रय तथा बापू के स्वप्न के भारत निर्माण का संकल्प लेकर पूर्ण हुआ। मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ, भाजपा प्रदेश अध्यक्ष श्री भूपेन्द्र सिंह, उपमुख्यमंत्री श्री केशव प्रसाद मौर्य व श्री बृजेश पाठक सहित पार्टी के पदाधिकारी, प्रदेश सरकार के मंत्री, सांसद, विधायक, आयोग, निगम, बोर्ड के अध्यक्ष व सदस्य, निकायों के अध्यक्ष व पार्षद, त्रिस्तरीय पंचायत के अध्यक्ष व सदस्यों सहित पार्टी के कार्यकर्ताओं ने जन्म जयंती पर महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि अर्पित की तथा स्वच्छता अभियान में सहभागिता व स्वदेशी को प्रोत्साहित करते हुए बढ़चढ़ कर खादी व स्थानीय उत्पादो की खरीददारी करके आत्मनिर्भर भारत निर्माण का संकल्प लिया।

भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष श्री भूपेन्द्र सिंह ने सादाबाद, हाथरस में महात्मा गांधी की प्रतिमा पर माल्यार्पण करते हुए कहा कि भारतीय जनता पार्टी ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के जन्मदिन 17 सितम्बर से महात्मा गांधी जयंती 02 अक्टूबर तक सेवा पखवाड़ा के तहत विभिन्न सेवा कार्यों के संकल्प के साथ कार्य किया। उन्होंने कहा कि महात्मा गांधी जी का जीवन सेवा, समर्पण व राष्ट्र की आत्मनिर्भरता के लिए समर्पित रहा और प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का जीवन भी वैभवशाली राष्ट्र निर्माण, गरीब, वंचित, शोषित वर्ग के आर्थिक व सामाजिक उत्थान तथा आत्मनिर्भर भारत के संकल्प की पूर्णता के लिए समर्पित है।

उन्होंने कहा कि भाजपा अनवरत कार्य करने वाला देश में एकमात्र ऐसा राजनैतिक दल है जो सेवा कार्यो के माध्यम से जनसरोकार के कार्यो से जुड़ता है। कोरोना काल में भाजपा कार्यकर्ताओं ने अपनी जान की परवाह किए बिना जरूरतमंदों तक भोजन, दवाई व अन्य आवश्यक वस्तुओं के साथ चिकित्सीय सुविधाएं भी उपलब्ध कराते हुए सेवा को ही संगठन मानकर कार्य किया। उन्होंने कहा कि जहां कांग्रेस, सपा, बसपा सहित तमाम विपक्षी दल चुनाव के समय सक्रिय होते हैं जबकि भाजपा के कार्यकर्ता चौबीसो घंटे सातों दिन कार्य करते है। श्री सिंह ने कहा कि हम सभी भाजपा कार्यकर्ताओं को अनवरत कार्य करने तथा जन–जन की सेवा करने की प्रेरणा महात्मा गांधी जी के सेवा तथा स्वावलम्बी राष्ट्र को समर्पित जीवन तथा प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के राष्ट्र व लोक की सेवा को समर्पित जीवन से प्राप्त होती है।

उन्होंने कहा कि सेवा पखवाड़ा के तहत नर सेवा–नारायण सेवा के संकल्प के साथ रक्तदान, निःशुल्क स्वास्थ्य परीक्षण शिविर, स्वच्छता अभियान, जल ही जीवन अभियान, स्थानीय उत्पादो के प्रोत्साहन के लिए वोकल फॉर लोकल, दिव्यांगों को कृत्रिम अंग व उपकरणों का वितरण, एक भारत श्रेष्ठ भारत को आत्मसात करके विविधता में एकता कार्यक्रम, टीबी मुक्त राष्ट्र के संकल्प के साथ अभियान, वृक्षारोपण, कोविड टीकाकरण के लिए जागरूकता अभियान आदि कार्यक्रमों व अभियानों की श्रृंखला के साथ भाजपा जन सरोकार के कार्यो से जुड़ी। देश के साथ पूरे प्रदेश में हर बूथ, शक्ति केन्द्र तक कार्यकर्ता सेवा के किसी न किसी उपक्रम में लगा रहा। मोदी जी के सेवा सेवकत्वभाव को प्रत्येक कार्यकर्ता अपने जीवन में उतारे जिससे अन्त्योदय का स्वप्न साकार हो सके।

उत्पादन तथा उत्पादकता दोनो को बढ़ाना जरुरी : सूर्य प्रताप शाही

कृषि क्षेत्र को जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों से निपटने के लिए ठोस कार्ययोजना बनाए जाने की आवश्यकता है। यह बात प्रदेश के कृषि मंत्री श्री सूर्य प्रताप शाही ने राज्य स्तरीय रबी उत्पादकता गोष्ठी–2022 के दौरान कही। उन्होंने जिलाधिकारियों को निर्देशित किया कि वह अपने जनपद की फसलवार उत्पादकता का आंकलन करें और देखे की किन–किन फसलों की उत्पादकता राष्ट्रीय स्तर और प्रदेश स्तर से कम है। उनका मुख्य फोकस प्रदेश की उत्पादकता कैसे बढ़े इस पर होना चाहिए। प्राकृतिक संसाधनों के दोहन पर चिन्ता व्यक्त करते हुये उनके द्वारा बताया गया कि प्रदेश में देश की 17 प्रतिशत आबादी के लिए 03 प्रतिशत ही भू–जल उपलब्ध है। जल के संरक्षण के लिए मा० मुख्यमंत्री जी द्वारा लांच की गयी अमृतसरोवर योजना का भी उल्लेख किया गया।

राज्य स्तरीय रबी उत्पादकता गोष्ठी– 2022 का आयोजन कृषि उत्पादन आयुक्त की अध्यक्षता में कृषि निदेशालय के प्रेक्षागृह में किया गया। कृषि निदेशक, उ0प्र0 द्वारा सभी प्रतिभागियों का स्वागत करते हुये प्रदेश की रबी हेतु रणनीति पर चर्चा करते हुये बताया गया कि प्रदेश में बीज एवं खाद की पर्याप्त व्यवस्था कर दी गयी है। किसानों को रबी की बुवाई में किसी भी निवेश की कमी का सामना नहीं करना पड़ेगा। उन्होंने अधिकारियों को पराली प्रबन्धन हेतु किसानों को जागरूक करने के निर्देश दिये तथा पराली में आग की घटनाओं के प्रति सजग रहने की अपेक्षा की गयी। कृषि उत्पादन आयुक्त श्री मनोज कुमार सिंह ने इस अवसर पर बताया कि कुल उत्पादन में रबी फसलों का हिस्सा दो तिहाई होता है इसलिए रबी की फसलों के उत्पादन एवं उत्पादकता पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। समय से बुवाई के महत्व के दृष्टिगत उन्होंने किसानों से समय से खेती की तैयारी करने का सुझाव दिया ताकि अधिकतम उत्पादकता प्राप्त की जा सके। जनपद लखनऊ के दो तीन गांवों को चयनित कर इसमें संरक्षित खेती के मॉडल तैयार करने के निर्देश दिये गये। बड़े–बड़े शहरो के पास के गांवों में भी इस तरह के मॉडल बनाने पर बल दिया गया। आमदनी वृद्धि हेतु किसानों को खेती के साथ–साथ खाद्य प्रसंकरण अपनाने की भी आवश्यकता है। कृषि एवं उद्यान विभाग द्वारा भी प्रयास किया जाये कि प्रत्येक गांव में संरक्षित खेती की कम से कम एक इकाई की स्थापना की जाये। उन्होंने बताया कि प्रदेश के प्रत्येक जिले में दो हाईटेक नर्सरी लगाने की व्यवस्था की गयी है। जिलाधिकारी एवं जिला उद्यान अधिकारी को इस बिन्दु पर तत्काल कार्यवाही करने के निर्देश दिये गये।

कृषि राज्य मंत्री द्वारा अपने उद्बोधन में इस खरीफ में मौसम की विपरीत परिस्थितियों का जिक्र करते हुये बताया गया कि धान, गेहूँ, गन्ना प्रदेश की मुख्य फसलें हैं। उन्होंने इस फसलों के अतिरिक्त अन्य फसलों की ओर उन्मुख होने के लिए कृषकों का आहवाहन किया। साथ ही प्राकृतिक खेती अपनाने पर भी जोर दिया गया। उन्होंने बताया कि प्राकृतिक खेती का सिद्धान्त है कि खर्चा कम हो आमदनी बढ़ें। कृषि विभाग द्वारा भी अपने केन्द्रों पर

प्राकृतिक खेती के प्रदर्शन लगाने के निर्देश दिये गये। कृषि को आगे बढ़ाने के लिए यह अपेक्षा की गयी कि जनपद में होने वाली कृषि गोष्ठियों में जिलाधिकारीगण जरूर प्रतिभाग करें।

उद्यान राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री दिनेश प्रताप सिंह द्वारा कृषकों का आहवाहन किया गया कि वह यदि उद्यानीकरण से जुड़ते है तो उनकी आय वृद्धि हो सकती है। मिर्जापुर, देवरियाँ जैसे जनपदों में स्ट्राबेरी की खेती करके किसान लाखों का लाभ ले रहे हैं।

उन्होंने समय पर गेहूं की बुवाई के साथ–साथ एफ0पी0ओ0 को बीजोत्पादन से जोड़ने पर बल दिया। उ०प्र० बीज विकास निगम उन एफ०पी०ओ० के साथ एम0ओ0यू० निष्पादित कर लें जिनको दृष्टि योजनान्तर्गत शतप्रतिशत अनुदान पर बीजा गोदाम एवं बीज विधायन संयंत्र दिये गये है। एक ट्रीलियन डालर की अर्थव्यवस्था के लिए कृषि के साथ–साथ उद्यान, पशुपालन, मत्स्य, दुग्ध विकास आदि विभागों की भूमिका को महत्वपूर्ण बताते हुये इसे प्राप्त करने का आहवाहन किया गया।

वर्तमान में मौसम की अनियमितता का उल्लेख करते हुये कृषि मंत्री द्वारा प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना का महत्व उपस्थित किसान जन समूह को बताया गया गत खरीफ में 22.5 लाख किसानों द्वारा कराये गये बीमा के आंकड़े को बताते हुये निर्देश दिये गये कि इनका समय से सर्वे कराते हुये नियमानुसार क्षतिपूर्ति की कार्यवाही प्राथमिकता पर करायी जाय। उन्होंने बताया कि मौसम के विपरीत परिस्थितियों के कारण खरीफ में जिन किसानों की फसल को नुकसान हुआ है या बुवाई से खेत खाली रह गया है उन्हें दलहन, तिलहन के मिनीकिट निःशुल्क दिये जायेगें। मिनीकिट के निःशुल्क बीज के रूप में 36 हजार कुन्तल दलहन बीज दिये जाने की व्यवस्था हैं। आगे आने वाले कृषि के स्वरूप पर भी चर्चा करते हुये कृषि मंत्री द्वारा डिजिटल एग्रीकल्चर के महत्व को भी बताया गया। सरकार द्वारा आर्टिफिसियल इन्टेलिजेन्स के माध्यम से मौसम की पूर्व सूचना, कीट रोग की जानकारी, कौन सी फसल किस क्षेत्र के लिए उपयुक्त होगी आदि विषयों पर सूचना की व्यवस्था शीघ्र ही कर ली जायेगी।

गोष्ठी के तकनीकी सत्र में कृषि विश्वविद्यालयों, केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, राष्ट्रीय दलहन अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिकों द्वारा गेहूं, जौ, सब्जी के साथ–साथ प्राकृतिक खेती पर विस्तृत जानकारी कृषकों को दी गयी। कृषकों हेतु प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम का आयोजन करते हुये इसमें प्रतिभागी कृषकों को पुरस्कार स्वरूप बीज मिनीकिट, बायोपेस्टीसाइड एवं अन्य पुरस्कार अपर मुख्य सचिव (कृषि) द्वारा वितरित किये गये। गोष्ठी के समापनोपरान्त विभागीय अधिकारियों के साथ अपर मुख्य सचिव (कृषि) द्वारा बैठक करते हुये विभागीय योजनाओं विशेष रूप से प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि, फसल अवशेष प्रबन्धन हेतु इनसीटू योजना, सब मिशन ऑन एग्रीकल्चरल मैकेनाईजेशन, बीज व्यवस्था, दलहन तिलहन, बीज मिनीकिट की समीक्षा भी की गयी।

आदि कवि महर्षि बाल्मिकी मानवीयता के प्रतीक : भूपेन्द्र सिंह

भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष श्री भूपेन्द्र सिंह चौधरी ने महर्षि बाल्मीकि को नमन करते हुए कहा कि आदि कवि महर्षि बाल्मीकि ने रामायण की रचना कर प्रभु श्रीराम की सत्य एवं कर्तव्यपरायणता का मार्ग जन–जन के लिए प्रशस्त किया। उन्होंने कहा कि महर्षि बाल्मीकि द्वारा रचित रामायण सामाजिक, मानवीय तथा राष्ट्रीय मूल्यों की स्थापना का आदर्श है। मुख्यालय पर आदि कवि महर्षि बाल्मीकि की जयन्ती मनाते हुए हवन–पूजन तथा प्रसाद वितरण के साथ महर्षि बाल्मीकि के चित्र पर पूजन व आरती के पश्चात् सभी ने कृतज्ञ नमन करते हुए आदि कवि द्वारा बताये गए मार्ग पर चलने का संकल्प लिया।

प्रदेश मुख्यालय पर प्रदेश महामंत्री (संगठन) श्री धर्मपाल सिंह, उपमुख्यमंत्री श्री केशव प्रसाद मौर्य, प्रदेश महामत्री श्री अश्वनी त्यागी, प्रदेश महामंत्री व राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री जेपीएस राठौर, प्रदेश महामंत्री श्रीमती प्रियंका सिंह रावत, श्री अमरपाल मौर्य, श्री गोविन्द नारायण शुक्ला, प्रदेश मंत्री श्री अमित बाल्मीकि, श्रीमती अर्चना मिश्रा, प्रदेश सरकार के मंत्री श्री असीम अरूण, श्री अनूप प्रधान बाल्मीकि, श्री लालजी निर्मल तथा बड़ी संख्या में पार्टी के कार्यकर्ताओं ने आदि कवि महर्षि बाल्मीकि को की आरती एवं पूजन करने के पश्चात् कहा कि महर्षि बाल्मीकि के योगदान के लिए भारत एवं भारतीय संस्कृति सदैव उनकी ऋणी रहेगी।

योगी आदित्यनाथ की साँस्कृतिक राष्ट्र साधना

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को संन्यास और राष्ट्रसेवा का भाव गौरक्षपीठ से विरासत में मिला है। इस वैचारिक और ऐतिहासिक पीठ का सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के जागरण में उल्लेखनीय योगदान है।

पीठाधीश्वर के रूप में योगी आदित्यनाथ इसका सतत संवर्धन कर रहे हैं। यही नहीं, मुख्यमंत्री पद के संवैधानिक दायित्व का निर्वाह भी वह इसी भाव से कर रहे हैं। यही कारण है कि प्रदेश में संस्कृति और विकास के क्षेत्र में अभूतपूर्व कार्य हो रहे हैं। गौरक्षपीठ करीब दो दर्जन शिक्षण संस्थानों का संचालन करती है। इन सभी में ज्ञान–विज्ञान के साथ ही भारतीय संस्कृति के प्रति स्वाभिमान की प्रेरणा दी जाती हैं। योगी आदित्यनाथ के मार्गदर्शन में गौरक्षपीठ सामाजिक सेवा और जन जागृति के कार्यों का विस्तार दे रही है। संविधान की परिधि में संचालित यह प्रकल्प आमजन के जीवन को सरल बना रहे हैं। इसका निहितार्थ है कि संविधान निर्माता भारत के समग्र विकास चाहते थे। पूर्ववर्ती सरकारों ने समाजवाद की राजनीति के नाम पर भेदभाव किया। वोट बैंक सियासत को अहमियत दी। सांस्कृतिक राष्ट्रवाद से परहेज किया। प्रदेश को चौपट कर दिया। योगी आदित्यनाथ केंद्र की नरेन्द्र मोदी सरकार की मदद से सुख–सुविधाओं से वंचित लोगों के जीवन में नई रोशनी ला रहे हैं। दोनों सरकारें सबका साथ सबका विकास और सबका विश्वास की भावना से कार्य कर रहीं हैं।

डा0 दिलीप अग्निहोत्री

प्रदेश और देश में राष्ट्रीय स्वाभिमान के जागरण से विपक्ष परेशान है। उत्तर प्रदेश के लोग अब विपक्ष की परम्परागत राजनीति को समझने लगे हैं। इसीलिए परिवारवाद अब हर मोर्चे पर मात खा रहा है। इन पार्टियों के राज में लोग अयोध्या में श्रीराम मन्दिर और काशी में भव्य श्री विश्वनाथ धाम निर्माण की कल्पना भी नहीं कर सकते थे। मगर अब यह हो रहा है। यही नहीं सदियों पुरानी समस्याओं का शांतिपूर्ण समाधान हो रहा है। विकास कार्यों के भी कीर्तिमान स्थापित हो रहे हैं। भारतीय संस्कृति और परिवेश के अनुरूप शिक्षा नीति से नई उम्मीद जगी है। ब्रह्मलीन महंत दिग्विजयनाथ जी की तिरपनवीं और ब्रह्मलीन महंत अवैद्यनाथ जी की आठवीं पुण्यतिथि आयोजित साप्ताहिक श्रद्धांजलि समारोह में योगी आदित्यानाथ गौरक्षपीठ की संस्कृति और सेवा की महान विरासत का उल्लेख कर चुके हैं। दुनिया यह जानती है कि गौरक्षपीठ के इन पूज्य आचार्यद्वय ने धर्म, समाज और राष्ट्र की समस्याओं से पलायन न करने का आदर्श स्थापित किया है। योगी कहते हैं कि उनकी साधना और सिद्धि प्रेरणादायक है। उन्होंने गोरक्षपीठ को मात्र पूजा पद्धति और साधनास्थली तक सीमित नहीं रखा। बल्कि शिक्षा, स्वास्थ्य और सेवा के विभिन्न आयामों से जोड़कर लोक कल्याण का मार्ग प्रशस्त किया। गौरक्षपीठ की परंपरा सनातन धर्म की महत्वपूर्ण कड़ी है। आश्रम पद्धति और समाज,देश और धर्म के प्रति दायित्व मार्गदर्शन इस पीठ ने किया है।

योगी आदित्यनाथ बार–बार कहते हैं कि भारतीय संस्कृति के आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः के सूत्र वाक्य को आत्मसात करते हुए उसके श्रेष्ठ अभ्यास को शासकीय संस्थानों में लागू किया जाना चाहिए। वह मनुष्य के विकास में शिक्षा को जरूरी हिस्सा मानते हैं। उनका स्कूल चलो अभियान इस दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। इस अभियान का करीब डेढ़ लाख स्कूलों में सफल क्रियान्वयन हुआ है। वह चाहते हैं कि हर व्यक्ति निरोगी रहे। इसलिए पूरे प्रदेश में स्वास्थ्य सुविधाओं का जाल फैलाया जा रहा है। सिद्धार्थ नगर में नौ जिलों में एक साथ नए मेडिकल कॉलेजों का लोकार्पण कर वह अपनी दूरदृष्टि से नौकरशाही को चेता चुके हैं। उनका सपना है कि उत्तर प्रदेश के सभी जनपदों मंप जल्द मेडिकल कॉलेज बनकर तैयार हों। इस योजना को कोरोना कालखंड में भी तेजी से क्रियान्वित किया गया। आज उत्तर प्रदेश में मेडिकल कॉलेज की संख्या 48 हो चुकी 13 पर तेजी से काम चल रहा है। पांच वर्ष पहले तक उत्तर प्रदेश में मात्र 12 मेडिकल कालेज थे।

पूर्वी उत्तर प्रदेश में चार दशकों के दौरान इंसेफेलाइटिस बीमारी से प्रतिवर्ष डेढ़ हजार बच्चे दम तोड़ देते थे। चालीस साल में पचास हजार मौतें हुई। योगी सरकार ने सबसे पहले इस पर काम किया। इनसब का परिणाम यह है कि इंसेफलाइटिस से होने वाली मौतें अब शून्य की तरफ हैं। स्पष्ट है कि गौरक्षपीठ ने शिक्षा, स्वास्थ्य और सेवा के विभिन्न आयामों से जोड़कर लोक कल्याण का मार्ग प्रशस्त किया। यह भावना आज उत्तर प्रदेश के विकास में परिलक्षित हो रही है।

'एकात्ममानवदर्शन' द्वंद्व और दुराग्रह से मुक्ति दिलाता है: नरेन्द्र मोदी

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने महान भारतीय चिन्तक पंडित दीनदयाल उपाध्याय के 'एकात्ममानवदर्शन' और 'अंत्योदय' पर चर्चा की और कहा कि दीनदयालजी का 'एकात्ममानवदर्शन' एक ऐसा विचार है, जो विचारधारा के नाम पर द्वंद्व और दुराग्रह से मुक्ति दिलाता है। श्री मोदी ने 25 सितम्बर को अपने मासिक रेडियो कार्यक्रम 'मन की बात' की 93वीं कड़ी में यह बात कही।

श्री मोदी ने कहा कि आज 25 सितंबर को देश के प्रखर मानवतावादी, चिन्तक और महान सपूत दीनदयाल उपाध्याय जी का जन्मदिन मनाया जाता है।

किसी भी देश के युवा जैसे–जैसे अपनी पहचान और गौरव पर गर्व करते हैं, उन्हें अपने मौलिक विचार और दर्शन उतने ही आकर्षित करते हैं।

दीनदयाल उपाध्याय जी कहते थे कि देश की प्रगति का पैमाना अंतिम पायदान पर मौजूद व्यक्ति होता है

उन्होंने कहा कि दीनदयाल जी के विचारों की सबसे बड़ी खूबी यही रही है कि उन्होंने अपने जीवन में विश्व की बड़ी–बड़ी उथल–पुथल को देखा था। वो विचारधाराओं के संघर्षों के साक्षी बने थे। इसीलिए, उन्होंने 'एकात्ममानवदर्शन' और 'अंत्योदय' का एक विचार देश के सामने रखा जो पूरी तरह भारतीय था।

श्री मोदी ने कहा कि दीनदयालजी का 'एकात्ममानवदर्शन' एक ऐसा विचार है, जो विचारधारा के नाम पर द्वंद्व और दुराग्रह से मुक्ति दिलाता है। उन्होंने मानव मात्र को एक समान मानने वाले भारतीय दर्शन को फिर से दुनिया के सामने रखा।

उन्होंने कहा कि हमारे शास्त्रों में कहा गया हैदृ 'आत्मवत् सर्वभूतेषु' अर्थात्, हम जीव मात्र को अपने समान मानें, अपने जैसा व्यवहार करें। आधुनिक, सामाजिक और राजनैतिक परिप्रेक्ष्य में भी भारतीय दर्शन कैसे दुनिया का मार्गदर्शन कर सकता है, ये दीनदयालजी ने हमें सिखाया। एक तरह से आजादी के बाद देश में जो हीनभावना थी, उससे आजादी दिलाकर उन्होंने हमारी अपनी बौद्धिक चेतना को जागृत किया। वो कहते भी थेदृ 'हमारी आज़ादी तभी सार्थक हो सकती है जब वो हमारी संस्कृति और पहचान की अभिव्यक्ति करे।' इसी विचार के आधार पर उन्होंने देश के विकास का विजन निर्मित किया था।

श्री मोदी ने कहा कि दीनदयाल उपाध्याय जी कहते थे कि देश की प्रगति का पैमाना अंतिम पायदान पर मौजूद व्यक्ति होता है। आज़ादी के अमृतकाल में हम दीनदयालजी को जितना जानेंगे, उनसे जितना सीखेंगे, देश को उतना ही आगे लेकर जाने की हम सबको प्रेरणा मिलेगी।

'परहित सरिस धरम नहीं भाई'

'मन की बात' के दौरान प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि हमारे शास्त्रों में कहा गया हैदृ'परहित सरिस धरम नहीं भाई' यानी दूसरों का हित करने के समान, दूसरों की सेवा करने, उपकार करने के समान कोई और धर्म नहीं है। उन्होंने कहा कि पिछले दिनों देश में समाज सेवा की इसी भावना की एक और झलक देखने को मिली। आपने भी देखा होगा कि लोग आगे आकर किसी ना किसी टी.बी. से पीड़ित मरीज को गोद ले रहे हैं, उसके पौष्टिक आहार का बीड़ा उठा रहे हैं।

श्री मोदी ने कहा कि दरअसल, ये टीबी मुक्त भारत अभियान का एक हिस्सा है, जिसका आधार जनभागीदारी है, कर्तव्य भावना है। सही पोषण से ही, सही समय पर मिली दवाइयों से, टीबी का इलाज संभव है। मुझे विश्वास है कि जनभागीदारी की इस शक्ति से वर्ष 2025 तक भारत जरुर टीबी से मुक्त हो जाएगा।

अब शहीद भगत सिंह के नाम से जाना जाएगा चंडीगढ़ एयरपोर्ट

चंडीगढ़ एयरपोर्ट का नाम बदलकर शहीद भगत सिंह के नाम पर रखा जाएगा। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 25 सितम्बर को अपने मासिक रेडियो कार्यक्रम 'मन की बात' के दौरान इसका उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि आज से तीन दिन बाद यानी 28 सितम्बर को अमृत महोत्सव का एक विशेष दिन आ रहा है। इस दिन हम भारत मां के वीर सपूत भगत सिंह जी की जयंती मनाएंगे।

श्री मोदी ने कहा कि भगत सिंह जी की जयंती के ठीक पहले उन्हें श्रद्धांजलि स्वरूप एक महत्वपूर्ण निर्णय किया है। यह तय किया है कि चंडीगढ़ एयरपोर्ट का नाम अब शहीद भगत सिंह जी के नाम पर रखा जाएगा।

'पूर्वोत्तर भारत के विकास का नया इंजन बन रहा है'

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जगत प्रकाश नड्डा 15 सितंबर, 2022 को अपने दो दिवसीय प्रवास पर नागालैंड के दीमापुर पहुंचे। इस प्रवास के दौरान श्री नड्डा ने विभिन्न महत्वपूर्ण कार्यक्रमों में भाग लिया और प्रदेश में पार्टी की गतिविधियों की समीक्षा की। श्री नड्डा के आगमन पर पार्टी नेताओं और कार्यकर्ताओं द्वारा हवाई अड्डे पर उनका गर्मजोशी से स्वागत किया। इस प्रवास के दौरान श्री नड्डा ने वोखा में एक जनसभा को संबोधित किया, कोहिमा में प्रदेश पदाधिकारियों के साथ बैठक की अध्यक्षता की। दूसरे दिन भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कोहिमा में एओ बैपटिस्ट चर्च और कैथेड्रल कैथोलिक चर्च का दौरा किया। श्री नड्डा ने दीमापुर में पुलिस परिसर में बुद्धिजीवियों एवं पेशेवरों के साथ बातचीत की और दीमापुर में प्रदेश भाजपा कोर कमेटी की बैठक की अध्यक्षता की।

ओल्ड रिफिम, वोखा में जनसभा

भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष ने वोखा के जीएमएस मैदान में एक जनसभा को संबोधित किया और नागालैंड के लोगों से शांति, समृद्धि और विकास के लिए एक बार फिर से एनडीए सरकार लाने का आह्वान किया। श्री नड्डा ने नागालैंड के स्वतंत्रता सेनानियों को भी श्रद्धांजलि अर्पित की, जिन्होंने मूलनिवासियों की रक्षा के लिए अंग्रेजों के खिलाफ लड़ाई लड़ी थी।

उनके संबोधन के प्रमुख बिंदु:

* हमें यह भी याद रखना चाहिए कि नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने रुजाशो गांव के नागा हिल्स में पहले आजाद हिंद प्रशासित गांव की स्थापना की थी।
* नागालैंड 16 जनजातियों का घर है और सभी 16 जनजातियां नागालैंड की संस्कृति के संरक्षण के लिए संघर्ष कर रही हैं। हम नागालैंड के वर्तमान आदिवासी नेताओं के भी आभारी हैं, जो आदिवासी संस्कृति की रक्षा कर रहे हैं।
* अगर किसी ने वास्तव में हमारे आदिवासी समाज की समस्याओं और मुद्दों को पहचाना है और उनके मुद्दों को गंभीरता से लिया है, तो वह प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी हैं।
* प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में 'नए भारत' की परिकल्पना में पूर्वोत्तर भारत विकास का नया इंजन बनता जा रहा है। 'राजमार्ग, रेलवे, जलमार्ग, वायुमार्ग और आई–वे' के आधार पर पूर्वोत्तर के विकास को सुनिश्चित करने की योजना तैयार की गई है।
* प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 'लुक ईस्ट' नीति को 'एक्ट ईस्ट' नीति में बदल दिया है।
* मोदी सरकार एक्ट ईस्ट पॉलिसी के तहत उत्तर पूर्व क्षेत्र को 'दक्षिण पूर्व एशिया' को जोड़ने वाला एक आर्थिक केंद्र बनाने के लिए प्रतिबद्ध है।
* एनडीए की डबल इंजन सरकार के शासन में नागालैंड अब शांति और समृद्धि की ओर मजबूती से आगे बढ़ रहा है।

'डीएमके' समाज को बांटती है

उन्होंने कहा कि तमिलनाडु में डीएमके विकास की बात करने की हिम्मत नहीं कर सकती। डीएमके में 'डी' का मतलब डायनेस्टी, 'एम' का मतलब 'मनी' और 'के' का मतलब कट्टा पंचायत है। यह डीएमके की सच्चाई है। वे सिर्फ क्षेत्रवाद की बात करते हैं, लेकिन यह भाजपा है जिसने तमिलनाडु के लोगों की क्षेत्रीय आकांक्षाओं का ध्यान रखा है। भाजपा ने तमिलनाडु की समृद्ध संस्कृति, कला और साहित्य को बढ़ावा देने और संरक्षित करने में बहुमूल्य योगदान दिया है, लेकिन डीएमके का क्या योगदान है? डीएमके सिर्फ नफरत की राजनीति में विश्वास करती है। डीएमके समाज को बांटती है। डीएमके और कांग्रेस ने कभी भी लोगों की क्षेत्रीय आकांक्षाओं का ध्यान नहीं रखा।

इस अवसर पर भाजपा के राष्ट्रीय महामंत्री और तमिलनाडु प्रभारी श्री सी.टी. रवि, तमिलनाडु भाजपा अध्यक्ष श्री के अन्नामलाई, केंद्रीय राज्य मंत्री श्री एल मुरुगन, विधानसभा के नेता श्री नागेंद्र और पार्टी के अन्य वरिष्ठ नेता उपस्थित रहे। ■

जे0पी0 के सम्पूर्ण क्रान्ति नारे को सफल बनाने का काम नरेन्द्र मोदी जी ने किया : अमित शाह

केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह जी ने सिताब दियारा (बिहार) में लोकनायक जयप्रकाश नारायण जी की जन्म जयंती के अवसर पर लोकनायक जयप्रकाश नारायण जी के स्मारक का उद्घाटन किया एवं उनकी आदमकद प्रतिमा का अनावरण किया। विशाल जनसभा को संबोधित करते हुए श्री शाह ने युवाओं से महान लोकनायक जयप्रकाश नारायण जी के जीवन से प्रेरणा लेते हुए देश के पुनर्निर्माण में सहयोग देने का आह्वान किया। कार्यक्रम में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी, प्रदेश भाजपा अध्यक्ष डॉ संजय जायसवाल जी, केंद्रीय मंत्री श्री नित्यानंद राय जी, श्री अश्वनी चौबे जी, पार्टी के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री राधामोहन सिंह जी, स्थानीय सांसद एवं पार्टी के राष्ट्रीय प्रवक्ता श्री राजीव प्रताप रुडी जी, पार्टी के वरिष्ठ नेता एवं सांसद श्री सुशील मोदी जी, जयप्रभा राष्ट्रीय स्मारक ट्रस्ट के अध्यक्ष एवं सांसद श्री वीरेन्द्र मस्त जी, श्री नीरज शेखर जी सहित कई वरिष्ठ भाजपा नेता एवं यूपी सरकार के कई मंत्रीगण उपस्थित थे। कार्यक्रम स्थमल पर विशाल जन–सैलाब उमड़ा था। लोग केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह जी को सुनने दूर–दूर से आये थे।

श्री शाह ने कहा कि लोकनायक जयप्रकाश नारायण जी की जन्म जयंती के दिन आज मुझे उनके जन्म स्थान पर आने और उनकी प्रतिमा का अनावरण करने का परम सौभाग्य प्राप्त हुआ है। लोकनायक जी के कार्यों से समग्र राष्ट्र के युवाओं को प्रेरित करने के उद्देश्य से हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने उनके जन्म स्थान पर उनकी आदमकद प्रतिमा और उनके नाम पर स्मारक बनाने का निर्णय लिया था जिसका संयोगवश उनकी जन्म जयंती के अवसर पर ही लोकार्पण हो रहा है।

केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री ने कहा कि लोकनायक जयप्रकाश नारायण जी का संपूर्ण जीवन अनेक मायनों में विशिष्ट रहा है। वे देश की आजादी के लिए क्रांति के रास्ते पर भी लड़े, महात्मा गाँधी जी के बताये रास्ते से भी लड़े और आजादी के बाद जब सत्ता में भागीदारी का समय आया तो वे एक सन्यासी की भांति सत्ता का परित्याग करते हुए आचार्य विनोबा भावे जी के सर्वोदय आंदोलन के साथ जुड़ कर जीवन भर भूमिहीनों, गरीबों, दलितों एवं पिछड़ों के कल्याण के लिए लड़ते रहे। लोकनायक जयप्रकाश नारायण जी ने समाजवाद, सर्वोदय की विचारधारा और जातिविहीन समाज की रचना की कल्पना की थी और इसके लिए जीवन पर्यंत काम किया।

श्री शाह ने कहा कि जब 70 के दशक में जब सत्ता में बैठी कांग्रेस सरकार ने भ्रष्टाचार की खुली लूट के लिए देश पर आपातकाल थोपा, तब लोकनायक जयप्रकाश नारायण जी ने इसके खिलाफ बहुत बड़ा आंदोलन किया। 1973 में गुजरात में इंदिरा जी की अगुवाई में कांग्रेस की सरकार चल रही थी, चिमन भाई पटेल मुख्यमंत्री थे और बिहार में अब्दुल गफूर मुख्यमंत्री थे। तब केंद्र की इंदिरा गाँधी सरकार के संरक्षण में सार्वजनिक रूप से कांग्रेस सरकारें चंदा उगाहने का काम कर रही थी, तब इस भ्रष्टाचार के खिलाफ गुजरात के विद्यार्थियों ने आंदोलन किया और उस आंदोलन का नेतृत्व लोकनायक जयप्रकाश नारायण जी ने किया था जिसके बल पर गुजरात में सत्ता परिवर्तन हुआ। उसके बाद बिहार में उनके नेतृत्व में आंदोलन शुरू हुआ। गाँधी मैदान में उनकी ऐतिहासिक रैली को देख कर तब इंदिरा गाँधी के पसीने छूट गए थे। जब जनता और अदालत, दोनों का निर्णय इंदिरा गाँधी के खिलाफ आया, तब इंदिरा गाँधी जी ने देश पर आपातकाल थोप दिया। लोकनायक जयप्रकाश जी को भी जेल में डाल दिया गया। उनके साथ ही विपक्ष के कई नेताओं को भी जबरन जेल में डाल दिया गया, उन्हें यातनाएं दी गई। सत्ता में बैठे लोगों को लगा कि यदि लोकनायक जयप्रकाश नारायण जी, श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी, लालकृष्ण आडवाणी जी सरीखे जनता की

आवाज को बंद कर दिया जाएगा तो इससे उनके हौसले पस्त हो जायेंगे लेकिन जिस लोकनायक को 1942 में अंग्रेजों भारत छोड़ो की क्रांति के दौरान हजारीबाग की जेल भी न रोक सकी, उस जयप्रकाश को इंदिरा गाँधी की यातनाएं भी कर्तव्य पथ से डिगा नहीं सकी। जब देश से आपातकाल का काला दौर ख़त्म हुआ तब लोकनायक ने पूरे विपक्ष को एक किया और इसका परिणाम यह हुआ कि देश में पहली बार एक गैर–कांग्रेसी सरकार का गठन हुआ। पहली बार जेपी ने जन संघ को भी साथ में लिया और सत्ता से बाहर कर किस प्रकार परिवर्तन किया जा सकता है, उसका एक उत्कृष्ट उदाहरण उन्होंने प्रस्तुत किया।

देश में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में सरकार चल रही है। विगत 8 वर्षों से आदरणीय प्रधानमंत्री जी ने लोकनायक जयप्रकाश नारायण जी और आचार्य विनोबा भावे के सर्वोदय के सिद्धांत के अनुरूप ही अंत्योदय की अवधारणा पर गरीब कल्याण का अभियान शुरू किया है। अब देश के लगभग 50 करोड़ से अधिक लोगों के पास आयुष्मान भारत का कार्ड है। लगभग 9 करोड़ गरीब महिलाओं को गैस का कनेक्शन मिला है, 11 करोड़ से अधिक शौचालयों का निर्माण हुआ, ढाई करोड़ से अधिक लोगों को प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत घर घर मिला, हर गाँव – हर घर में बिजली पहुंची, हर गाँव को पक्के सड़क से जोड़ा गया और लगभग ढाई साल से देश के लगभग 80 करोड़ लोगों को प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना के तहत मुफ्त राशन दिया जा रहा है।

श्री शाह ने कहा कि जब मैं बहुत छोटा था, तब मैंने नारा सुना था – "अंधेरे में एक प्रकाश, जयप्रकाश जयप्रकाश।" उसी नारे पर गुजरात और बिहार के युवा एकत्रित होकर सत्ता परिवर्तन करने में सहायक हुए थे लेकिन लोकनायक जयप्रकाश नारायण जी ने 'संपूर्ण क्रांति' का नारा भी दिया था। संपूर्ण क्रांति के नारे को किसी भी कांग्रेसी ने सफल बनाने का यत्न नहीं किया। संपूर्ण क्रांति के नारे को सफल बनाने का काम देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने किया है। विगत 8 वर्षों में देश के लगभग 60 करोड़ लोगों के जीवन स्तर को ऊपर उठाने, उनके लिए रोजगार के अवसर बनाने एवं उनके घरों से अंधियारे को हटा कर उजियारा करने का काम आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने किया है।

जब 1974 में लोकनायक जयप्रकाश नारायण जी ने बिहार में क्रांति का बिगुल बजाया था, वह गैर–राजनीतिक आंदोलन था। सभी विचारधाराओं के छात्र लोकनायक जयप्रकाश नारायण जी की अगुआई में एकत्रित हुए थे। यहाँ सुशील मोदी जी बैठे हैं, ये भी उसी आंदोलन के प्रोडक्ट हैं मगर इस आंदोलन के कई और लोग हैं जो पूरा जीवन जेपी और लोहिया जी का नाम लेते रहे लेकिन आज वे सत्ता के लिए कांग्रेस की गोद में बैठे हुए हैं। मैं आज बिहार की जनता से पूछना चाहता हूँ कि जो जेपी का नाम लेकर उनके आंदोलन से निकले और जो आज केवल और केवल सत्ता के लिए आज कांग्रेस की गोद में बैठे हुए हैं, क्या आप उससे सहमत हैं? यह लोकनायक जयप्रकाश नारायण जी का बताया हुआ मार्ग नहीं है। लोकनायक ने जीवन भर सत्ता के लिए नहीं बल्कि सिद्धांतों के लिए लड़ाई लड़ी लेकिन उनका नाम लेकर राजनीति में आने वाले लोग, सत्ता के लिए पांच–पांच बार पाला बदलने वाले लोग बिहार का मुख्यमंत्री बने बैठे हैं। बिहार की जनता को यह तय करना है कि उन्हें लोकनायक जयप्रकाश नारायण जी के दिखाए हुए रास्ते पर आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व वाली भारतीय जनता पार्टी की सरकार चाहिए या फिर लोकनायक के बताये रास्ते से भटक कर सत्ता के लिए लालायित गठजोड़ करने वाली सरकार?

श्री शाह ने कहा कि आने वाले दिनों में जेपी के सिद्धांतों युवा प्रेरणा लें, इसलिए उनका स्मारक बनाने का विचार आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने लिया था। मैं वीरेन्द्र मस्त जी को बधाई और साधुवाद देना चाहता हूँ जिन्होंने स्मारक ट्रस्ट के अध्यक्ष होने के नाते इस कार्य में दिन–रात लग कर इसे पूरा किया है। यहाँ पर एक बहुत बड़ा रिसर्च सेंटर बनने वाला है, फैकल्टी के रहने की सुविधाएं भी बनेगी और विद्यार्थियों के लिए भी रिसर्च की सुविधा होगी। लोकनायक जयप्रकाश नारायण जी के ग्रामोत्थान, सहकारिता और सर्वोदय के सिद्धांत को हम आगे बढ़ाने के लिए कृतसंकल्पित हैं। यदि हम लोकनायक जयप्रकाश नारायण जी के सिद्धांतों से प्रेरणा लेते हुए आगे बढ़ते रहें तो देश को विश्वगुरु बनने से कोई नहीं रोक सकता।

वैचारिकी : पं. दीनदयाल उपाध्याय जयंती

देश को दिशा दिखा गए दीनदयाल उपाध्याय

भारत की भूमि पर समय–समय पर ऐसे महामानव का अवतरण होता रहा है, जो स्वयं के लिए नहीं, बल्कि राष्ट्र और समाज के लिए ही जीता और मरता है। उसका जीवन आनेवाली पीढ़ियों के लिए आदर्श होता है, उसका चिंतन समाज के लिए मार्ग होता है और उसका कर्म देश को दिशा देनेवाला होता है। ऐसे ही महामानव थे पंडित दीनदयाल उपाध्याय। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद देश को आवश्यकता थी अपनी एक ऐसी मौलिक विचारधारा की, जिसमें देश के अंतिम व्यक्ति की चिंता करते हुए राजनीति को सेवा का साधन बनाया जा सके। देश के गौरव की रक्षा करते हुए इसे संपन्न और समृद्ध बनाने के लिए एक चिंतन की। भारत माता की उर्वर धरती ने पंडित दीनदयाल उपाध्याय जैसे महान सपूत को जन्म देकर एक नई दिशा दिखानेवाले को खड़ा कर दिया। अपने आदर्शों एवं विचारों के कारण भारत के लोगों के दिल–दिमाग में स्थान बनाने वाले और एकात्म मानववाद की विचारधारा देनेवाले जनसंघ के संस्थापकों में शामिल पंडित दीनदयाल उपाध्याय राजनीति के पथ प्रदर्शक, महान चिंतक, सफल संपादक, यशस्वी लेखक और भारत माता के सच्चे सेवक के रूप में स्मरणीय रहेंगे।

तरुण चुघ

जन्म 25 सितम्बर, 1916 उत्तरप्रदेश के मथुरा जिला के चंद्रभान में एक मध्यम वर्गीय परिवार में जन्म लेनेवाले दीनदयाल उपाध्यायजी का बचपन विपत्तियों में बीता। संघर्ष ही साथी बना रहा और साहस संबल। जब उनकी आयु मात्र ढ़ाई साल की थी, तब उनके जीवन से पिता का साया उठ गया, आठ साल के हुए तो माता चल बसी। यानी पूरी तरह अनाथ हो गए। इसके बाद उनका पालन–पोषण उनके नाना के यहां होने लगा, लेकिन दुर्भाग्यवश दस वर्ष की आयु में उनके नाना का भी देहांत हो गया। अब अल्पायु में ही इनके उपर छोटे भाई को संभालने की भी जिम्मेदारी। कोई भी आदमी होता तो इन विपत्तियों के सामने हार मान लेता, लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी और आगे बढ़ते रहे।

उनकी मेधा अद्वितीय थी। माध्यमिक परीक्षा में वे सर्वोच्च रहे, अंतर स्नातक और स्नातक में अव्वल रहे। अंग्रेजी साहित्य में एमए की प्रथम वर्ष की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की, किन्तु पढ़ाई अधूरी छोड़नी पड़ी। कानपुर में अपनी बीए की पढ़ाई के दौरान महाशब्दे और सुंदर सिंह भंडारी के साथ मिलकर समाज सेवा करते हुए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक डॉ. हेडगेवार एवं भाऊराव देवरस से संपर्क में आने के बाद राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की विचारधारा से प्रभावित होकर संघ से जुड़ गए। अविवाहित रहकर जीविकोपार्जन की चिंता न करते हुए अपने जीवन को देश और समाज के लिए समर्पित कर दिया। राष्ट्रधर्म, पांचजन्य और स्वदेश के यशस्वी संपादक के रूप में उन्होंने राष्ट्रवादी स्वर को मुखर किया। पं. दीनदयाल उपाध्याय एक सफल साहित्यकार भी थे। एक सफल लेखक के रूप में अपनी रचनाओं को युवाओं और देशवासियों को प्रेरित किया। उनका एक–एक विचार और चिंतन देश के लिए काम आया। दूरदर्शिता और कार्यक्षमता ने आजादी के बाद देश की राजनीति में दिशाहीनता को समाप्त कर एक वैचारिक विकल्प दिया।

1951 में डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी द्वारा स्थापित भारतीय जनसंघ में पहले महामंत्री बनाए गए। 1967 में जनसंघ के अध्यक्ष बने, लेकिन महज 44 दिनों तक ही कार्य कर पाए, जो देश के लिए दु:खद रहा। उनकी प्रतिभा,

भारत माता की उर्वर धरती ने पंडित दीनदयाल उपाध्याय जैसे महान सपूत को जन्म देकर एक नई दिशा दिखानेवाले को खड़ा कर दिया। अपने आदर्शों एवं विचारों के कारण भारत के लोगों के दिल-दिमाग में स्थान बनाने वाले और एकात्म मानववाद की विचारधारा देनेवाले जनसंघ के संस्थापकों में शामिल पंडित दीनदयाल उपाध्याय राजनीति के पथ प्रदर्शक, महान चिंतक, सफल संपादक, यशस्वी लेखक और भारत माता के सच्चे सेवक के रूप में स्मरणीय रहेंगे

सांगठनिक शक्ति और कार्यक्षमता को देखकर डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी को कहना पड़ा कि यदि मुझे ऐसे दो दीनदयाल मिल जाएं तो मैं देश का राजनीतिक मानचित्र बदल दूंगा।

राष्ट्र निर्माण व जनसेवा में उनकी तल्लीनता के कारण उनका कोई व्यक्तिगत जीवन नहीं रहा। उनके पास जी कुछ भी था, वह समाज और राष्ट्र के लिए था। उनके विचारों और त्याग की भावना ने उन्हें अन्य लोगों से अलग सिद्ध कर दिया। दीनदयाल उपाध्याय जनसंघ के राष्ट्रजीवन दर्शन के निर्माता माने जाते हैं। उनका उद्देश्य स्वतंत्रता की पुनर्रचना के प्रयासों के लिए विशुद्ध भारतीय तत्व–दृष्टि प्रदान करना था। उन्होंने भारत की सनातन विचारधारा को युगानुकूल रूप में प्रस्तुत करते हुए एकात्म मानववाद की विचारधारा दी। उनका विचार था कि आर्थिक विकास का मुख्य उद्देश्य सामान्य मानव का सुख होना चाहिए। उनका कहना था कि 'भारत में रहने वाला, इसके प्रति ममत्व की भावना रखने वाला मानव समूह एक जन हैं। उनकी जीवन प्रणाली, कला, साहित्य, दर्शन सब भारतीय संस्कृति है। इसलिए भारतीय राष्ट्रवाद का आधार यह संस्कृति है। इस संस्कृति में निष्ठा रहे तभी भारत एकात्म रहेगा।' किसी भी व्यक्ति या समाज के गुणात्मक उत्थान के लिए आर्थिक और सामाजिक पक्ष ही नहीं उसका सर्वांगीण विकास अनिवार्यता है। पं. दीनदयाल उपाध्यायजी का मत था कि राष्ट्र की निर्धनता और अशिक्षा को दूर किए बिना गुणात्मक उन्नति संभव नहीं है। ख़ास बात यह है कि अंत्योदय के वैचारिक प्रणेता पं. दीनदयाल उपाध्यायजी का दर्शन मात्र लेखन व उनके चिंतन तक ही सीमित नहीं था। संगठन के कार्य से वह जब भी प्रवास के लिए जाते थे, तब भी वे वरीयता के आधार पर समाज में अंतिम पायदान पर खड़े लोगों के यहां ही ठहरते थे। ऐसा उदाहरण भारतीय राजनीति में बिरले ही मिल रहा है।

वर्तमान में श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में चल रही केंद्र सरकार एकात्म मानववाद को केंद्र में रखते हुए गरीब से गरीब व्यक्ति के उत्थान एवं विकास के संकल्प के साथ समाज के कमजोर और गरीब वर्ग के उत्थान के लिए कार्य कर रही है। गत आठ वर्षों से प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में चल रही सरकार ने गरीब–कल्याण के अपने लक्ष्य से पंडित दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानववाद के दर्शन और अंत्योदय की विचारधारा को साकार कर दिखाया है। 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास, के लिए केंद्र सरकार लगातार काम कर रही है। श्री नरेन्द्र मोदी सरकार का सीधा असर है कि अंत्योदय योजनाओं का सबसे ज्यादा लाभ देश के गरीब, वंचित, शोषित और पीड़ितों को मिल रहा है। देश ही नहीं, बल्कि आज पूरा विश्व भारत की ओर उम्मीद भरी नजरों से देख रहा है। इसके पीछे निश्चित रूप से मोदी सरकार की एकात्म मानववाद पर आधारित नीतियां ही है।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी ने व्यक्तिगत व सामुदायिक जीवन को गुणवत्ता प्रदान करने का मार्ग देश को दिखाया। वर्तमान समय में समाज जीवन को एकात्म मानववाद से निकले मूल्यों व संस्कारों को आत्मसात करने से ही समाज और राष्ट्र का भला होगा। पं. दीनदयाल उपाध्याय जी के जीवन के प्रत्येक पक्ष हम सब के लिए अनुकरणीय है, क्योंकि उन्होंने हर क्षेत्र में सहयोग, समन्वय व सह-अस्तित्व को स्थान दिया है। अंत्योदय के जनक पं. दीनदयाल उपाध्याय जी ने वंचित वर्ग के हित संवर्धन के लिए साझा सामाजिक दायित्वों को प्राथमिकता देने के लिए सम्यक दृष्टि भी प्रदान की। जयंती पर ऐसे महामानव को शतकोटि नमन

पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने व्यक्तिगत व सामुदायिक जीवन को गुणवत्ता प्रदान करने का मार्ग देश को दिखाया। वर्तमान समय में समाज जीवन को एकात्म मानववाद से निकले मूल्यों व संस्कारों को आत्मसात करने से ही समाज और राष्ट्र का भला होगा। पं. दीनदयाल उपाध्याय जी के जीवन के प्रत्येक पक्ष हम सब के लिए अनुकरणीय है, क्योंकि उन्होंने हर क्षेत्र में सहयोग, समन्वय व सह–अस्तित्व को स्थान दिया है। अंत्योदय के जनक पं. दीनदयाल उपाध्याय जी ने वंचित वर्ग के हित संवर्धन के लिए साझा सामाजिक दायित्वों को प्राथमिकता देने के लिए सम्यक दृष्टि भी प्रदान की। जयंती पर ऐसे महामानव को शतकोटि नमन।

श्रद्धांजलि

मुलायम सिंह यादव पंचतत्व में विलीन

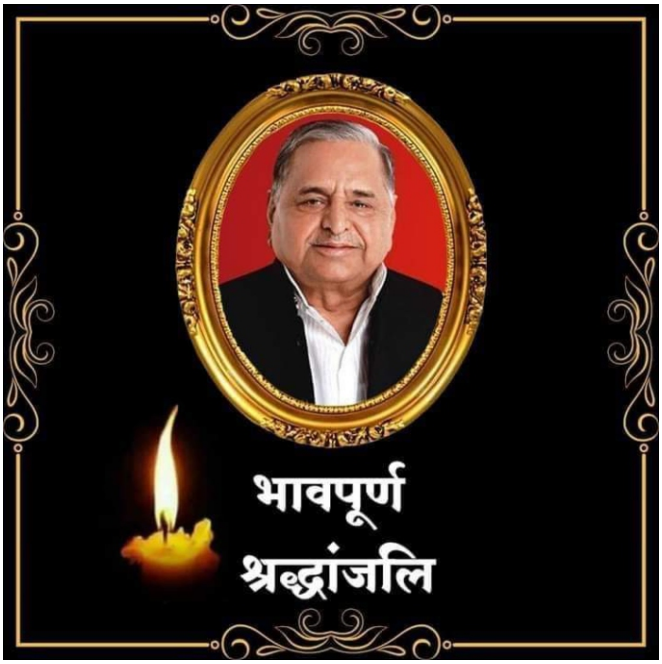

राजनीतिक जीवन प्रवाह

समाजवादी पार्टी के संरक्षक पूर्व मुख्यमंत्री तथा पूर्व केंद्रीय रक्षा मंत्री मुलायम सिंह यादव जी के निधन पर देश सहित पुरा प्रदेश शोक में डूब गया राजनीति जगत की अपूर्णीय क्षति बताया गया। देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, गृह मंत्री अमित शाह, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, राज्यपाल आनन्दीबेन पटेल, उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य, ब्रजेश पाठक ने निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया।

प्रदेश अध्यक्ष भूपेंद्र सिंह चौधरी जी ने शोक व्यक्त करते हुए कहा कि मुलायम सिंह यादव जी का निधन भारतीय राजनीति के लिए अपूरणीय क्षति है। ईश्वर उन्हें अपने श्रीचरणों में स्थान दें व अपार दुःख की घड़ी में हमारी संवेदनाएं शोक संतप्त परिजनों के साथ हैं।

प्रदेश महामंत्री संगठन धर्मपाल सिंह जी ने कहा कि समाजवादी पार्टी के संस्थापक व वरिष्ठ राजनेता, उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव जी का निधन अत्यंत दुःखद है। ईश्वर दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करें एवं परिजनों तथा समर्थकों को यह असीम दुरूख सहन करने की शक्ति दें।

धरती पुत्र श्री मुलायम सिंह यादव

1967, 1974, 1977, 1985, 1989, 1991, 1993 और 1996
सदस्य, उत्तर प्रदेश विधान सभा (आठ कार्यकाल)

1989–91 मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश

1989 नेता, जनता दल विधायक दल, उत्तर प्रदेश

1992 के बाद संस्थापक अध्यक्ष, समाजवादी पार्टी

1993–95 मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश

1996 11 वीं लोकसभा के लिए चुने गए

1996–98 केंद्रीय कैबिनेट मंत्री, रक्षा

1998 12 वीं लोकसभा के लिए फिर से निर्वाचित (दूसरा कार्यकाल)

1998–99 सदस्य, सामान्य प्रयोजन समिति

1999 13 वीं लोकसभा के लिए फिर से निर्वाचित (तीसरा कार्यकाल)

1999–2000अध्यक्ष, पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस पर स्थायी समिति

अगस्त 2003–मई 2007 मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश

2004 14 वीं लोकसभा के लिए फिर से निर्वाचित (चौथा कार्यकाल)

मई 2009 15 वीं लोकसभा के लिए फिर से निर्वाचित (5वीं अवधि)

31 अगस्त 2009 अध्यक्ष, ऊर्जा संबंधी स्थायी समिति

मई 2014 16 वीं लोकसभा के लिए फिर से निर्वाचित (6 वीं अवधि)

1 सितंबर 2014 – 25 मई 2019 सदस्य, श्रम संबंधी स्थायी समिति सदस्य, सलाहकार समिति, गृह मंत्रालय

मई 2019 17 वीं लोकसभा के लिए फिर से निर्वाचित

13 सितंबर 2019 के बाद सदस्य, कृषि, पशुपालन और खाद्य प्रसंस्करण पर स्थायी समिति

21 नवंबर 2019 के बाद सदस्य, सामान्य प्रयोजन समिति, लोकसभा सदस्य, सलाहकार समिति, गृह मंत्रालय

23मई 2019 – 10 अक्टूबर 2022 सांसद लोकसभा, मैनपुरी

धरती पुत्र मुलायम सिंह यादव दुनिया की राजनीति का सबसे प्रबल नेता '82 वर्ष की आयु में निधन।

"वन्य प्राणि सप्ताह - 2022"

पत्रिका पंजीकरण – RNI-51899/91 डाक पंजीकरण – SSP/LW/NP-117-2021-23
अक्टूबर प्रथम अंक 2022 – प्रेषित डाकघर – R.M.S. चारबाग, लखनऊ – प्रेषण तिथि : 11–13 (प्रथम पाक्षिक)

भारतीय जनता पार्टी के लिए मुद्रक तथा प्रकाशक प्रो. श्यामनन्दन सिंह द्वारा नूतन ऑफसेट मुद्रण केन्द्र, संस्कृति भवन, राजेन्द्र नगर, लखनऊ से मुद्रित व भाजपा कार्यालय, 7, विधानसभा मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित। सम्पादक : अरूण कान्त त्रिपाठी